• जयपुर, रविवार, 29 अक्टूबर 23 • वर्ष 01 • अंक 75 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.com | Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2022-23

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक

राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

सुविचार

''उठो, निडर बनो, मजबूत बनो। सारी जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले लो, और जान लो कि तुम अपने भाग्य के निर्माता खुद हो। आप जो भी ताकत और सहायता चाहते हैं, वह आपके भीतर है।''

● स्वामी विवेकानंद

पेज @2 ऑल राजस्थान जाट महासभा ने डोटासरा पर ईडी...

पेज @3 ज्योति खंडेलवाल, चन्द्रशेखर बैद, रविन्द्र सिंह भाटी सहित आधा ...

पेज @8 लोकेश शर्मा का हजारों समर्थकों के साथ मुख्यमंत्री आवास पर शक्ति ...

कांग्रेस की विधायक इंदिरा मीणा के समर्थको ने सीएम गहलोत सरकार की योजनाओं की तारीफ

डोटासरा से घबराई भाजपा का गीत सुनकर माहौल को बनाया

चमकता राजस्थान

जयपुर! कांग्रेस की विधायक इंदिरा मीणा के समर्थको ने सीएम गहलोत सरकार की योजनाओं की तारीफ और डोटासरा से घबराई भाजपा का गीत सुनकर माहौल को बनाया खुशनुमा मुख्यमंत्री निवास पर शुक्रवार को प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की मौजूदगी में कांग्रेस की बावनवास विधायक इंदिरा मीणा के समर्थकों ने पूर्वी राजस्थान की ब्रज भाषा में तारीफों का गुणगान किया। कांग्रेस के समर्थको ने गीत में कहा कि डोटासरा से भाजपा घबरा गई है।समर्थको ने सीएम गहलोत की पुरानी पेंशन योजना को लेकर भी गुणगान किया और कहा कि योजनाओं का ही कमाल है किआज भाजपा के लोग घबराए हुए हैं।सीएम गहलोत और डोटासरा ने भी इन समर्थकोंका अभिवादन किया और सरकार की योजनाओं और डोटासरा की तारीफ में बनाए गए गीत से निश्चित तौर पर चुनाव में कांग्रेस का माहौल बनेगा।सीएम गहलोत और डोटासरा ने कहा कि अब आपके गांव-गांव जाकरइस गीत कोआम लोगों तक पहुंचना है जिससे कांग्रेस की स्थिति मजबूत होगी और हम फिर से सत्ता में आएंगे।

फास्ट टेक

सरकार अपने पूंजीपतियों को मुफ्त चीजें बांटकर भारत की अर्थव्यवस्था को डिफॉल्टर युग में ले जा रहीःखड़गे

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा। कांग्रेस अध्यक्ष का कहना है मोदी सरकार मुफ्त की रेवड़ियां बांटकर भारत की अर्थव्यवस्था को डिफॉल्टर युग में ले जा रही है।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, "नरेंद्र मोदी जी आपकी सरकार भारत की अर्थव्यवस्था को 'डिफॉल्टर काल' (डिफॉल्टर युग) में ले जा रही है। अपने पूंजीपतियों को 'मुफ्त की रेवड़ियां' बांटना और आम लोगों की बचत को नष्ट करना आपका एकमात्र एजेंडा रहा है। क्या यह सच नहीं है कि मार्च 2019 के बाद से जानबूझकर कर्ज न चुकाने वालों का बकाया प्रति दिन 100 करोड़ तक बढ़ गया है? क्या आपकी सरकार ने पिछले 9 वित्तीय वर्षों में 14.56 लाख करोड़ रुपये का एनपीए माफ नहीं किया?

असम में भाजपा नेता की हत्या, परिवार ने स्थानीय कांग्रेस नेताओं पर लगाया आरोप

गुवाहाटी/एजेंसी। असम के करीमगंज जिले में पिछले कुछ दिनों से लापता 47 वर्षीय पूर्व पंचायत सदस्य और भाजपा नेता का शव मिला है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने शुक्रवार रात जिले के पत्थरकांडी इलाके में भारतीय जनता पार्टी के स?थानीय नेता अब?दुल सत?तार का शव बरामद किया। गत 23 अक्टूबर को उनकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी। करीमगंज जिले के पुलिस अधीक्षक पार्थ प्रतिम दास ने बताया कि हत्या का मामला दर्ज किया गया है। सत्तार के शरीर पर कई बाह-री चोटों के निशान हैं, जिससे पता चलता है कि उन्हें प्रताड़ित किया गया था। उन्होंने कहा, "परिवार ने यह भी आरोप लगाया कि पीड़िता की हत्या की गई है।" इस बीच, मृतक अब्दुल सत्तार के परिवार के सदस्यों ने आरोप लगाया कि उनकी हत्या में एक स्थानीय कांग्रेस नेता सुरमान अली और उनके दोस्त शामिल थे।

पीएम मोदी ने 51000 युवाओं को दिए नियुक्ति पत्र

नई दिल्ली/एजेंसी

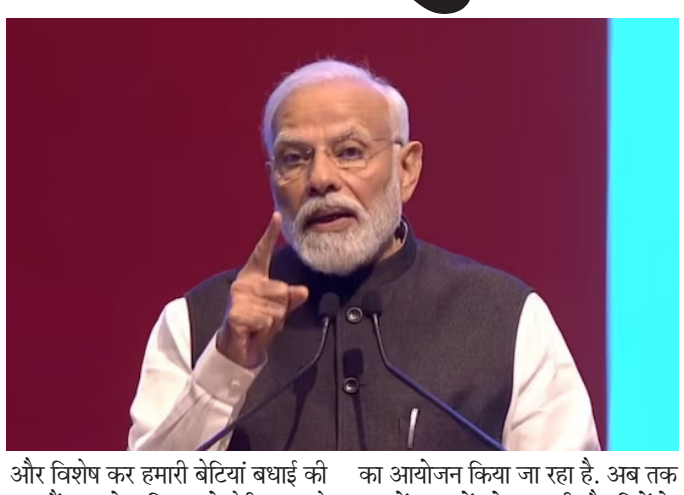

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज शनिवार को रोजगार मेले के तहत 51 हजार लोगों को नियुक्ति पत्र सौंपा. पीएम मोदी इस रोजगार मेले कार्यक्रम में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए हैं. यह रोजगार मेला देशभर में 37 स्थानों पर आयोजित किया गया है. बता दें कि इस मेले के तहत केंद्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकार और केंद्र शासित प्रदेश में भर्तियां हो रही हैं. पीएम मोदी कार्यक्रम में शामिल नव-नियुक्त कर्मचारियों को संबोधित किया.

इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, ''दिवाली में अभी कुछ ही वक्त बाकी है. लेकिन नियुक्ति पत्र पाने वाले 50,000 युवाओं के परिवार के लिए यह मौका दिवाली से जरा भी कम नहीं है, आपने कड़ी मेहनत से यह मुकाम हासिल किया है. इसके लिए आप सभी नौजवान साथी और विशेष कर हमारी बेटियां बधाई की पात्र हैं. आपके परिवार को मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं.''

इसके अलावा पीएम मोदी ने कहा, 'रोजगार मेला' की शुरुआत पिछले साल अक्टूबर में हुई थी. केंद्र और एनडीए, बीजेपी शासित राज्यों में 'रोजगार मेला' का आयोजन किया जा रहा है. अब तक लाखों युवाओं को सरकारी नौकरियों के लिए नियुक्ति पत्र दिये जा चुके हैं. आज 50 हजार से ज्यादा युवाओं को सरकारी नौकरी दी गयी है.'

नए कर्मचारी रेल मंत्रालय, डाक विभाग, गृह मंत्रालय, राजस्व विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग और साक्षरता विभाग व मंत्रालय सहित अलग-अलग मंत्रालयों के विभागों में शामिल होंगे. प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि रोजगार मेला रोजगार सृजन को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता को पूरा करने की दिशा में एक कदम है. बयान के अनुसार इससे रोजगार सृजन में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने और युवाओं को उनके सशक्तीकरण तथा राष्ट्रीय विकास में भागीदारी के लिए सार्थक अवसर प्रदान करने की उम्मीद है. नियुक्त किए जाने वाले सरकारी कर्मचारियों को कर्मयोगी पोर्टल पर एक ऑनलाइन मॉड्यूल कर्मयोगी प्रारंभ के माध्यम से खुद को प्रशिक्षित करने का अवसर मिलेगा. 750 से अधिक ई-लर्निंग पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए गए हैं. ये कर्मचारी कहीं से भी और किसी भी डिवाइस के माध्यम से जुड़ सकते हैं.

सूरत में एक पूरे परिवार ने की सामूहिक आत्महत्या, भीषण त्रासदी में 3 बच्चों समेत 7 लोगों की मौत

सूरत/एजेंसी। सूरत में सामूहिक आत्महत्या किए जाने की खबर सामने आई है. इस त्रासद घटना में एक साथ सात लोगों की मौत हो गई. सूरत में इस दिल दहला देने वाली घटना में एक पूरे परिवार ने जहर निगलकर सामूहिक आत्महत्या कर ली. एक शख्स ने अपनी पत्नी, माता-पिता, एक लड़के और दो बच्चियों के साथ सामूहिक आत्महत्या कर ली. शांतिलाल सोलंकी ने फांसी लगाकर आत्महत्या की, जबकि परिवार के अन्य सदस्यों के जहर खाकर आत्महत्या करने की आशंका जताई जा रही है. यह घटना सूरत के पालनपुर इलाके की है.

पुलिस के मुताबिक यह दुखद घटना शनिवार को सूरत के अडाजण इलाके में हुई. इस घटना ने सूरत के निवासियों को सदमे में डाल दिया है क्योंकि चार वयस्कों और तीन बच्चों सहित परिवार के सात सदस्यों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली है. घटना अडाजण के पालनपुर पाटिया स्थित सिद्धेश्वर अपार्टमेंट में हुई. शांतिलाल सोलंकी ने अपनी पत्नी, मां, पिता और तीन बच्चों सहित परिवार के सदस्यों को पहले जहर दिया और बाद में अपने अपार्टमेंट में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली. इलाके के निवासियों के पुलिस को घटना की सूचना दिए जाने के बाद अडाजण पुलिस और वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे.

इस घटना ने पालनपुर पाटिया में रहने वाले लोगों के बीच सदमे की लहर फैला दी है. पुलिस ने मौत का कारण जानने के लिए शवों को पोस्टमार्टम के लिए न्यू सिविल अस्पताल (एनसीएच) में रखवाया है. पुलिस अधिकारियों ने परिवार और उनकी वित्तीय स्थिति के बारे में अधिक जानने के लिए पड़ोसियों और इलाके के दूसरे लोगों से पूछताछ शुरू कर दी है.

13 घंटे लेट हुई ट्रेन, अहम मीटिंग में भाग नहीं ले सका यात्री

रेलवे को देना होगा 60,000 रुपये मुआवजा

नई दिल्ली/एजेंसी

केरल के एर्नाकुलम जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने दक्षिण रेलवे को ट्रेन लेट होने पर एक यात्री को 60,000 रुपये देने का आदेश दिया है. एलेप्पी एक्सप्रेस के 13 घंटे देरी से चलने के कारण यात्री चेन्-नई में होने वाली अपनी कंपनी की मीटिंग में नहीं पहुंच पाया था. इस वजह से उसे काफी निराशा और हानि हुई. उपभोक्ता आयोग ने कहा कि यात्रियों के समय का महत्व निर्विवाद है. ट्रेन लेट होने से उत्पन्न हुई हानि के लिए रेलवे जिम्मेदार है.

कार्तिक नाम के एक शख्स ने चैन्नई जाने के लिए 6 मई, 2018 को एलेप्पी एक्सप्रेस में टिकट बुक कराया था. कार्तिक को अपनी कंपनी की एक महत्वपूर्ण मीटिंग में भाग लेना था. निर्धारित समय पर वह रेलवे स्टेशन पर पहुंच गया. परंतु ट्रेन समय पर नहीं आई. एलेप्पी एक्सप्रेस पूरा 13 घंटे लेट थी. ट्रेन लेट होने की वजह से कार्तिक कंपनी की महत्वपूर्ण बैठक में भाग नहीं ले सका. इसका प्रतिकूल प्रभाव उसके करियर पर पड़ा. कार्तिक ने रेलवे से अपने नुकसान की भरपाई के लिए एर्नाकुलम जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग में केस दायर कर दिया और रेलवे से नुकसान की भरपाई की मांग की.

● जब ट्रेन में लाशें बिछाने के बाद चेतन सिंह ने पत्नी को किया फोन

'हेल्लो! बड़ी गलती हो गई...खुद को गोली मार लूं?'

नई दिल्ली/एजेंसी। मुंबई-जयपुर ट्रेन गोलीकांड मामले में एक ओर बड़ा खुलासा हुआ है. मुंबई के पास जयपुर एक्सप्रेस ट्रेन में चार लोगों की हत्या करने के कुछ क्षण बाद आरपीएफ यानी रेलवे सुरक्षा बल के आरोपी कांस्टेबल चेतन सिंह चौधरी ने कथित तौर पर अपनी पत्नी को फोन करके जघन्य अपराध कबूल किया था और उससे पूछा कि क्या उसे खुद को भी गोली मार लेनी चाहिए. पुलिस ने आरोपी चेतन सिंह की पत्नी के बयान के हवाले से दावा किया है, जो कि इस केस में चार्जशीट का भी हिस्सा है.

जुलाई महीने में जयपुर-मुंबई ट्रेन गोलीकांड के बाद पुलिस को दिए एक बयान में आरोपी चेतन सिंह चौधरी की पत्नी प्रियंका ने दावा किया कि उनके पति ने कबूल किया है कि उसने 'बड़ी गलती' की है. उन्होंने यह भी बताया कि आरोपी के मस्तिष्क में 'खून का थक्का' था और वह इसके लिए दवाएं ले रहा था.

महुआ मोइत्रा को एथिक्स कमेटी ने 2 नवंबर को बुलाया, संसद के सम्मान से जुड़ा मामला बताया

नई दिल्ली/एजेंसी

पैसे लेकर संसद में सवाल पूछने के मामले में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की सांसद महुआ मोइत्रा पर लगे आरोपों की जांच कर रही लोकसभा की आचार समिति (एथिक्स कमेटी) ने टीएमसी सांसद के आग्रह पर अब उन्हें 31 अक्टूबर की बजाय 2 नवंबर को सुबह 11 बजे कमेटी के सामने पेश होकर अपने बचाव में तथ्यों को रखने के लिए कहा है. दरअसल, इस मामले में महुआ मोइत्रा के खिलाफ शिकायत करने वाले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद निशिकांत दुबे और वकील जय अनंत देहाद्राई की गवाही के बाद लोकसभा की एथिक्स कमेटी ने अपना पक्ष रखने के लिए महुआ मोइत्रा को 31 अक्टूबर को बुलाया था. लेकिन, महुआ मोइत्रा ने शुक्रवार को एथिक्स कमेटी के अध्यक्ष विनोद सोनकर को पत्र लिखकर यह बताया कि वह अपने संसदीय क्षेत्र में पहले से निर्धारित कार्यक्रमों के कारण 4 नवंबर से पहले दिल्ली नहीं आ सकती, इसलिए समिति उन्हें 5 नवंबर के बाद कभी भी पेश होने का समय दे दें.

उन्होंने पत्र में कहा था, ''मैं पश्चिम बंगाल राज्य का प्रतिनिधित्व करती हूं जहां दुर्गा पूजा सबसे बड़ा त्योहार है. मैं पहले से ही 30 अक्टूबर से 4 नवंबर 2023 तक अपने निर्वाचन क्षेत्र में कई पूर्व-निर्धारित विजयादशमी कार्यक्रमों/बैठकों (सरकारी और राजनीतिक दोनों) में भाग लेने के लिए प्रतिबद्ध हूं.

उद्योगपति मुकेश अंबानी को फोन पर मिली धमकी, बोले हमारे पास देश के सबसे अच्छे शूटर्स...

मुंबई/एजेंसी

देश के बड़े उद्योगपति मुकेश अंबानी को फोन पर जान से मारने की धमकी मिली है और उनसे 20 करोड़ रुपये की मांग की गई है. पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है. गांव देवी थाने में धारा 387 506(2) के तहत एफआईआर दर्ज की गई है. मुकेश अंबानी के सुरक्षा प्रभारी ने ये एफआईआर दर्ज कराई है. बताया जा रहा है कि मुकेश अंबानी को ईमेल के जरिए जान से मारने की धमकी मिली है. धमकी भरा ईमेल शादाब खान के नाम से आया है. एफआईआर के मुताबिक धमकी 27 अक्टूबर को ईमेल के जरिए मिली.

धमकी भरे ईमेल में लिखा है- ''IF you don't give us 20 crore rupees, we will kill you, we have the best shooters in india'' (अगर तुमने हमें 20 करोड़ रुपये नहीं दिए, तो हम तुम्हें जान से मार देंगे, हमारे पास भारत के सबसे अच्छे निशानेबाज हैं)

पुलिस ने कहा कि धमकी 27 अक्टूबर को शादाब खान नाम के व्यक्ति ने भेजी थी. पुलिस ने मुकेश अंबानी के आवास एंटीलिया के सुरक्षा अधिकारियों द्वारा जान से मारने की धमकी की जानकारी उनके संज्ञान में आने के बाद शिकायत दर्ज की.

बता दें कि रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी 92 अरब डॉलर की कुल संपत्ति के साथ पिछले दिनों एक बार फिर फोर्ब्स की सूची में सबसे अमीर भारतीय बन गए. फोर्ब्स ने कहा, 'जियो फाइनेंशियल सर्विसेज को अलग कर शेयर बाजार में सूचीबद्ध करने के फौरन बाद अंबानी ने अगस्त में अपने तीनों बच्चों को रिलायंस के निदेशक मंडल में गैर-कार्यकारी निदेशक के रूप में जगह देकर अपनी उत्तराधिकार योजना को मजबूती दी.' इस बीच, फोर्ब्स की 2023 सूची के मुताबिक, भारत के 100 सबसे अमीर लोगों की सामूहिक संपत्ति इस साल 799 अरब डॉलर पर स्थिर बनी रही.

संक्षिप्त समाचार

रामदास तरुण LIC अभिकर्ता को ब्रांच मैनेजर एवं विकास अधिकारी द्वारा किया सम्मानित

चमकता राजस्थान/धौलपुर!(राजेश)। धौलपुर के बाड़ी उपखंड में कार्य कर रहे रामदास तरुण छक्ष अभिकर्ता के द्वारा(भारतीय जीवन बीमा निगम) एलआईसी के क्षेत्र में अच्छा कार्य करने पर भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा धौलपुर के शाखा प्रबंधक रामकरण मीणा एवं विकास अधिकारी संजय यादव के द्वारा रामदास तरुण छक्ष अभिकर्ता को दुपट्टा उड़ाकर स्वागत सम्मान किया गया।इस कार्यक्रम के मौके पर ब्रांच मैनेजर धौलपुर रामकरण मीणा, विकास अधिकारी संजय यादव, एलआईसी अभिकर्ता मुकेश पुरी अन्य लोग मौजूद रहे

आम आदमी पार्टी ने चरण दास जाटव को बनाया प्रत्याशी

चमकता राजस्थान/वैर (राजवीर सिंह)। इंडिया गठबंधन को छोड़ते हुए आम आदमी पार्टी ने वैर विधानसभा क्षेत्र से अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया। यहां से चरण दास जाटव को पार्टी ने अपना उम्मीदवार बनाया है जबकि इंडिया गठबंधन की एक अन्य पार्टी कांग्रेस के प्रत्याशी भजनलाल जाटव पहले से ही चुनाव मैदान में मौजूद है। आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा एडवोकेट, तेजं सिंह डांगुर किसान संभाग अध्यक्ष, कमल सिंह सर्किल अध्यक्ष ने माला एवं साफा पहनाकर करके प्रत्याशी चरण दास जाटव का स्वागत किया। आप पार्टी के प्रत्याशी चरणदास बताया गया कि पार्टी ने पंजाब में बहुत ही अच्छे कार्य किये हैं। जिसमें किसी प्रकार का भेदभाव भी नहीं रखा सब के प्रति समान का व्यवहार किया है। मुझे विधानसभा वैर से आम पार्टी ने प्रत्याशी बनाया है। आपको विश्वास दिलाता हूं किस क्षेत्र के विकास के लिए समर्पित रहूंगा जनता की सेवा में समर्पित रहूंगा।

हिंसक वन्य जीव के हमले से 75 वर्षीय वृद्ध किसान की हुई मौत

चमकता राजस्थान/अराई! शंकर शर्मा। (अजमेर)ब्लॉक के बोर-ाड़ा थाना क्षेत्र के मुंडोती गांव में विगत दिवस शुक्रवार सुबह बकरियों के लिए मुंडोती निवासी रामेश्वर पुत्र कल्याण खाती जिसकी आयु लगभग75वर्ष है जो अपने खेत पर प्रातः काल अल सुबह बकरियों के लिए चारा लेने खेत पर गया था थोड़ा अंधेरा भी था जिसका फायदा उठाते हुए जंगली हिंसक वन्य जीव ने वृद्ध पर हमला कर दिया जिसके कारण अनुमान है कि वृद्ध किसान रामेश्वर पुत्र कल्याण खाती की मृत्यु हुई है जब समय ज्यादा होने पर भी उसके बेटे हनुमान खाती को एवम परिवार के सदस्यों को पिताजी चारा लेकर वापस घर नहीं लोटे तो सबको चिंता हुई । वन्य जीव के हमले का शिकार हुए किसान के परिजन जब उसे ढूंढने निकले तो उसका शव खेत में बुरी तरह से नोचा हुआ पड़ा मिला। इसी प्रकार से वन्य जीव ने शुक्रवार को ही अन्य चरवाहे अमराराम बैरवा पर जानलेवा हमला कर जिससे वह बुरी तरह से खून से लथपथ हो गया। उसे उपचार के लिए ग्रामीणों ने उसे अस्पताल पहुंचाया है। मामले की ग्रामवासियों एवम परिजनों ने घटना की पुलिस थाने बोराडा में एवम वन विभाग सरवाड़ को दी जानकारी मिलने के बाद वन विभाग ने हिंसक जानवर की पहचान के लिए पगमार्क के सहारे वन्य जीव की खोज करना शुरू किया मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को बोराड़ा अस्पताल पहुंचाया वन विभाग ने हिंसक जंगली जानवर की तलाश करना प्रारंभ कर दिया है।

ऑल राजस्थान जाट महासभा ने डोटासरा पर ईडी की कार्यवाही का किया पुरजोर विरोध

ऑल राजस्थान जाट महासभा की कार्यकारिणी का विस्तार

जयपुर। (का. सं)

ऑल राजस्थान जाट महासभा ने होटल खासा कोठी में विशेष प्रेस वार्ता का आयोजन कर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा पर ईडी की जो द्वेषपूर्ण कार्रवाई की गई है, उसका पुरजोर विरोध किया। ऑल राजस्थान जाट महासभा के संरक्षक एडवोकेट महेश मावलिया, अध्यक्ष कर्मवीर चौधरी, युवा प्रदेश अध्यक्ष कुलदीप ढेवा, महिला प्रदेश अध्यक्ष अंकलेश जाखड़, डॉ. आशा लता फोगाट और मीडिया प्रभारी अनिल जाखड़ ने वार्ता में बताया कि आने वाले चुनाव में जाट समाज को कमजोर करने के लिए हमारे नेताओं पर जो कार्यवाही की जा रही है उसको जाट समाज बर्दाश्त नहीं करेगा।

इस अवसर पर ऑल राजस्थान जाट महासभा ने चुनावों में भी सभी राजनीतिक पार्टियों के द्वारा जाट समाज को आधिकारिक भागीदारी दिए जाने की मांग रखी और ऐसा नहीं करने पर खुली चेतावनी भी दी ।कार्यक्रम में ऑल राजस्थान जाट महासभा की कार्यकारिणी का विधिवत गठन किया गया और शपथ ग्रहण समारोह भी हुआ। इस अवसर पर महासभा ने सर्वसम्मति से पांच प्रस्ताव भी पारित किये , जिसमें ईआरसीपी को राष्ट्रीय परियोजना के रूप में क्रियान्वित करने और यथाशीघ्र पूरा करने , फल सब्जी को लेकर आरसीडीएफ की तर्ज पर फेडरेशन का गठन, महिला आरक्षण में ओबीसी की सहभागिता सुनिश्चित करने, चुनावों में महिला आरक्षण दिए जाने, ओबीसी का आरक्षण 35% किए जाने और चुनाव में जाट समाज को संख्या के अनुपात में टिकट दिए जाने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को सर्वसम्मति से पारित किया गया। आने वाले समय में आल राजस्थान जाट महासभा प्रत्येक जिला मुख्यालय पर जन जागृति अभियान चलाएगी और सामाजिक कुरीतियों के खात्मे के लिए भी काम करेगी। समाज में शिक्षा के विकास और सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता को लेकर भी बड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर ऑल राजस्थान जाट महासभा से जुड़े विपिन लामोरिया , संदीप पूनिया, रतन मांगलोदा, रोशन खद्दा, संदीप जाखड़, शंकर लाल चौधरी, मनीष चौधरी, बलराम जाखड़ समेत सैकड़ो समाज बंधु मौजूद रहे।

चुनावी मुद्दों को लेकर जाट समाज की प्रेस कॉन्फ्रेंस

विधानसभा प्रभारी मीना गंगोला के मुख्य आतिथ्य में भाजपा शहर अध्यक्ष लक्ष्मीकांत शर्मा के आवास पर मीटिंग हुई

चमकता राजस्थान

कुम्हेर (दीपचंद शर्मा) कुम्हेर, भारतीय जनता पार्टी तहसील कुम्हेर संयुक्त मंडल मीटिंग भाजपा शहर मंडल अध्यक्ष लक्ष्मीकांत शर्मा के आवास पर उत्तराखंड पूर्व विधायक व प्रदेश मंत्री तथा विधानसभा प्रभारी मीना गंगोला के मुख्य आथित्य में आयोजित की गई । इस अवसर पर मीना गंगोला ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए बतलाया कि वर्तमान समय मे भाजपा ही कार्यकर्ता आधारित पार्टी है और कार्यकर्ता का सम्मान भाजपा में ही संभव है । कार्यकर्ताओं की मेहनत और पार्टी के प्रति समर्पण भाजपा की जीत का आधार है, इस बार राजस्थान में भाजपा सरकार बनाने जा रही है और डीग कुम्हेर मे भी हम कमल खिलाने जा रहे हैं । कांग्रेस के झूठे वायदे महंगी बिजली और डीजल की दरे प्रतियोगी परीक्षाओं का घोटाला बदहाल कानून व्यवस्था महिला और बालिकाओं पर अत्याचार कांग्रेस की पराजय का मुख्य आधार है ।कुम्हेर भारतीय जनता पार्टी तहसील कुम्हेर संयुक्त मंडल मीटिंग आज भाजपा पूर्व विधायक व प्रदेश मंत्री तथा विधानसभा प्रभारी मीना गंगोला के मुख्य आथित्य में आयोजित की गई । इस अवसर पर मीना गंगोला ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए बतलाया कि वर्तमान समय मे भाजपा ही कार्यकर्ता आधारित पार्टी है और कार्यकर्ता का सम्मान भाजपा में ही संभव है कार्यकर्ताओं की मेहनत और पार्टी में भाजपा सरकार बनाने जा रही है और डीग कुम्हेर मे भी हम कमल खिलाने जा रहे हैं कांग्रेस के झूठे वायदे महंगी बिजली और डीजल की दरे प्रतियोगी परीक्ष-ाओं का घोटाला बदहाल कानून व्यवस्था महिला और बालिकाओं पर अत्याचार कांग्रेस की पराजय का मुख्य आधार है । इस अवसर पर विधानसभा संयोजक जगदीश अजान, शहर मंडल अध्यक्ष लक्ष्मीकांत शर्मा, ग्रामीण मंडल अध्यक्ष डॉक्टर गुलाब शर्मा, आजउ पाहुआ अध्यक्ष खुशीराम पूनिया, अजान मंडल अध्यक्ष प्रहलाद सिंह, धर्मवीर गुर्जर, कपिल देव शर्मा, भूदेव शर्मा, डालचंद बघेल, सोहन सिंह

राजस्थान पुलिस की सफल कार्रवाइयों का परचम

- 19 वे दिन ही 200 करोड़ का आंकड़ा किया पार

चमकता राजस्थान/जयपुर (खलील कुरैशी)। पिछ ले चुनावों में 60 दिन में 65 करोड़ की जब्ती हुई थी। प्रतिदिन 1 करोड़ से 11 करोड़ की औसत से हो रही जब्ती ड्ड आजतक के राजस्थान के चुनावों के इतिहास में कीर्तिमान आंकड़ा। करीब 60 करोड़ के मादक पदार्थों की जब्ती ,20-20 करोड़ से ज्यादा की नकदी, सोना-चांदी और अवैध शराब की हुई जब्ती। भारी मात्रा में मुफ्त की रेवड़ी,हथियार और वाहन भी हो रहे जब्तड्ड उड़न दस्तों, नाकाबन्दियों और विशेष टीमों के सहयोग से कर रही राजस्थान पुलिस कार्रवाई। विधानसभा चुनावों को धनबल के दुरूपयोग से प्रभावित करने की मंशा रखने वाले तत्वों के कुत्सित मंसूबों को नेस्तनाबूत करने को कटिबद्ध है राजस्थान पुलिस। अपने वॉर-रूम "STORMCLUB " के माध्यम से कमान संभाले हुए है नोडल अधिकारी IGP विकास कुमार

राजस्थान से ब्राह्मण समाज के हजारों लोग पहुंचे दिल्ली

चमकता राजस्थान

भरतपुर (दीपचंद शर्मा) भरतपुर, राजस्थान प्रदेश से अलग-अलग जिलों से महेश शर्मा अध्यक्ष पर कल्याण बोर्ड राजस्थान के समर्थन में कांग्रेस कार्यालय दिल्ली में सद्बुद्धि यज्ञ किया गया जिसमें हजारों लोग शामिल हुए । लोगो ने कांग्रेस पार्टी को अवगत कराया कि आपने विप्र समाज के नेता के साथ बहुत गलत किया है क्योंकि राजस्थान में जो ब्राह्मण समाज को एकत्रित करने का कार्य किया जो शर्मा ने किया है । कांग्रेस पार्टी ब्राह्मणों के नाम से जानी जाती है लेकिन अब राजस्थान का ब्राह्मण समाज पूरी तरह प्रत्येक जिले में नाराज है । समय रहते हुए कांग्रेस पार्टी को महेश शर्मा को याद किया जाए उनको मालवीय नगर विधानसभा से या अन्य विधानसभा से टिकट देकर ब्राह्मण समाज का मान रखा जाए नहीं तो ब्राह्मण समाज नाराज होकर प्रत्येक विधानसभा में कांग्रेस पार्टी का विरोध प्रदर्शन आगामी चुनाव में करेंगे ।

रैली निकालकर दिया शत प्रतिशत मतदान का संदेश

चमकता राजस्थान

बाप(कविकान्त खत्री)। स्वीप कार्यक्रम के तहत महिला एवं बाल विकास बाप के तत्वावधान मे शनिवार को कानासर में जन जागृति रैली का आयोजन हुआ। सीडीपीओ प्रीति शर्मा व सुपरवाइजर कौशल्या बिश्नोई तथा अध्यापक बाबुलाल पालीवाल के नेतृत्व मे रैली निकाली गई। सीडीपीओ शर्मा ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओ से कहा कि हम घर-घर जाकरमतदाताओ को मतदान का महत्व समझाए। मतदान से देश व राज्य का भविष्य तय होता है। हम अपने मत का बिना दबाव, निर्भय होकर प्रयोग करे। सरकार की मंशा है कि शत प्रतिशत मतदान हो। इस पुनीत कार्य मे हम सहभागी बने। इस मौके कानासर सरपंच सुगनी देवी विश्नोई, किशनी, निरमा, गीता, सुवटी, शांति, दीनी, बिरमा, मूर्ति, अध्यापक भजनाराम सारण, ओमप्रकाश सारण, भागीरथ सारण, सुखकरण पारिख, बाबूलाल पालीवाल, सुरेश चौधरी आदि उपस्थित थे।

भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा मानक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन।

चमकता राजस्थान/बहादुरपुर (राजवीर सिंह)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भजेड़ा में भारतीय मानक ब्यूरो की और से मानक लेखन की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विधालय के तीस विद्यार्थियों ने भाग लिया।कार्यक्रम अधिकारी जयपुर संभाग डॉक्टर अनंत शर्मा,कैलाश कुमावत ने दो दो के समूह में प्रतियोगिता आयोजित की।प्रथम स्थान पर मिताली एवम् रेखा रही वही द्वितीय मोनिका रही। पुरुस्कार वितरण के दौरान अनंत शर्मा ने उपभोक्ता के अधिकार विषय पर विस्तृत जानकारी व हॉलमार्क से युक्त सामान की पहचान कैसे करें यह भी छात्र छात्राओं को बताया गया।संस्था प्रधान कोमलकांत शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया।प्रभारी अध्यापक राकेश कुमार एवम् सह प्रभारी अर्पित दुआ ने बच्चो की परीक्षा का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान ओम प्रकाश वर्मा,चेतना शुक्ल, नरेश शर्मा, करन सिंह ,नंद किशोर सहित विधालय स्टाफ उपस्थित रहे।

नाकाबंदी में हनुमानगढ़ पुलिस ने 3.27 करोड रुपए कीमत के सोने के आभूषण किए जप्त

चमकता राजस्थान/हनुमानगढ़! (खलील कुरैशी)28 अक्टूबर। रावतसर थाना पुलिस की टीम ने नोहर तिराहे पर नाकाबंदी के दौरान एक पंजाब नंबर की वरना कार से 3 करोड़ 27 लाख रुपए अनुमानित कीमत के सोने के आभूषण जप्त किए हैं।एसपी डॉ राजीव पचार ने बताया कि विधानसभा चुनाव के मध्य नजर चुनाव आयोग द्वारा जारी निर्देशों की अनुपालना में आईजी बीकानेर रेंज ओमप्रकाश के निर्देश पर बनाए गए नाकों पर नाकाबंदी कर संदिग्ध वाहनों व व्यक्तियों की चेकिंग की जा रही है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बनवारी लाल मीणा व सुभाष शर्मा व सीओ महेंद्र कुमार मेघवंशी के निर्देशन में शनिवार को एसएचओ अरुण चौधरी मय जाब्ता द्वारा नोहर तिराहे पर नाकाबंदी की गई थी।एसपी पचार ने बताया इस दौरान पंजाब नंबर की एक संदिग्ध वरना कार को रुकवाया गया। कार सवार सर्वजीत कुमार निवासी कोर्ट करनैल सिंह हाउस अमृतसर पंजाब के पास से 3 करोड़ 27 लाख रुपए अनुमानित कीमत के सोने के आभूषण मिलने पर इंट्रसेप्ट की कार्रवाई कर एफएसटी टीम के सहयोग से आभूषण एवं कार के सीजर की कार्रवाई की गई।

हर्षोल्लास से महर्षि वाल्मीकि की जयंती मनाई

चमकता राजस्थान/वैर (राजवीर सिंह)। बयाना गेट वाल्मीकि बस्ती में पूर्व पार्षद महीपाल जादो की अध्यक्षता में महर्षि वाल्मीकि जयंती समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि राजन चौधरी, तथा विशिष्ट अतिथि के तौर पर पूर्व मंडल अध्यक्ष तेजाराम जाटव व बाबूलाल, छीतरमल तथा अनूप वाल्मीकि,मनीष कुमार वाल्मीकि, हुकम सिंह सैनी ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि राजन चौधरी ने महर्षि वाल्मीकि के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित किया और भगवान वाल्मीकि के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। वाल्मीकि समाज को एकता के सूत्र में हिल मिल कर रहने की बात कही। कार्यक्रम की श्रृंखला में पूर्व पार्षद महीपाल जादो ने भी भगवान वाल्मीकि के उत्सव पर अपने विचार रखे और समाज में महर्षि वाल्मीकि जी के चरण चिन्हों पर शिक्षा का अलख जगाने के लिए हर घर घर बच्चों को संस्कार देना है। और बुराईयों को जीवन से दूर करना है। इसी संदर्भ में तेजाराम जाटव और अनूप वाल्मीकि ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम सभी को संस्कारित बनना है और सत्कर्म कर आगे बढ़ना है।जयंती समारोह सादगी पूर्ण मनाया गया। इस कार्यक्रम में बाबूलाल जाटव,छीतरमल वाल्मीकि,मनीष कुमार जादो, कमलकांत सैनी, भूपेंद्र, कमल धाकड़ ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष आदि लोग उपस्थित थे।

आरएलपी ने 10 उम्मीदवारों की घोषणा की, मंत्री भाटी के सामने कोलायत से रेवतराम उतरेंगे

हनुमान बेनीवाल ने खींवसर से भरी पुनः हुंकार,लड़ेंगे विधानसभा चुनाव

जयपुर।(खलील कुरैशी)

हनुमान बेनीवाल की राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) ने विधानसभा चुनावों के लिए 10 उम्मीदवारों की घोषणा की है। सांसद हनुमान बेनीवाल खींवसर से विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। मौजूदा विधायक और हनुमान के भाई नारायण बेनीवाल का खींवसर से टिकट काट दिया गया है, उन्हें फिलहाल किसी और सीट पर नहीं उतारा गया है।

- **कोलायत से मंत्री भाटी की सीट पर रेवतराम पंवार को उतारा**

कोलायत से मंत्री भंवर सिंह भाटी की सीट पर आरएलपी से रेवतराम पंवार को टिकट दिया है। रेवतराम पंवार पहले विधायक रह चुके हैं। पंवार पिछले दिनों ही कांग्रेस छोड़कर आरएलपी में शामिल हुए थे।

- **2018 में हनुमान बेनीवाल खींवसर से जीते थे**

» हनुमान बेनीवाल ने 2018 का विधानसभा चुनाव खींवसर सीट से जीता था। साल 2019 के लोकसभा चुनाव में बेनीवाल ने बीजेपी से गठबंधन करके एनडीए उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ा था। हनुमान बेनीवाल के सांसद बनने के बाद इस सीट पर अक्टूबर 2019 में उपचुनाव हुआ`उपचुनाव में आरएलपी से हनुमान बेनीवाल के भाई नारायण बेनीवाल जीते। इस बार उपचुनाव में जीते नारायण बेनीवाल की टिकट काटी गई है। यहां से हनुमान बेनीवाल खुद चुनाव लड़ेंगे।

कांग्रेस पार्टी छोडकर आए नेताओं ने जताया पीएम नरेन्द्र मोदी पर विश्वास

ज्योति खंडेलवाल, चंद्रशेखर बैद, रविन्द्र सिंह भार्टी सहित आधा दर्जन नेताओं ने थामा भाजपा का दामन

आचार संहिता में प्रदेश के मुखिया का इस प्रकार गारंटिया देना कोड आफ कंडक्ट का उल्लंघनः राजेन्द्र राठौड

जयपुर। (का. सं)

राज्य में विधानसभा चुनावों से पहले भाजपा का कुनबा लगातार बढता ही जा रहा है। कांग्रेस सरकार की नीतियों और झूठे वादों से परेशान होकर कांग्रेस सहित अन्य दलों के नेता भाजपा का दामन थाम रहे है। इस कड़ी में शनिवार को जयपुर की पूर्व महापौर ज्योति खंडेलवाल और तारानगर से पूर्व विधायक चन्द्र शेखर बैद के साथ ही जयनारायण विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष रविन्द्र सिंह भार्टी भाजपा में शामिल हुए। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सी.पी. जोशी, भाजपा प्रदेश प्रभारी अरूण सिंह, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड ने सभी को पार्टी का दुपट्टा ओढाकर व मिठाई खिलाकर सदस्यता ग्रहण करवाई।

इस मौके पर प्रदेशाध्यक्ष सी.पी. जोशी ने कहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत संवैधानिक पद पर बैठकर ईडी के अधिकारियों को गाली दे रहे हैं। प्रदेश के सभी कर्मचारी उनके इस आचरण को देख रहे हैं कि एक मुख्यमंत्री किस कदर हार के डर से बौखलाकर कर्मचारी अधिकारियों के लिए इस प्रकार की भाषा का उपयोग कर रहे हैं। अब समय आ गया है जब प्रदेश की जनता इस तरह गाली देने वाले और अपमान करने वाले मुखिया को विदा कर देगी। देश और दुनिया में प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों और विचारधारा के समर्थक बढ़ रहे हैं। देश की जनता प्रधानमंत्री मोदी की गारंटियों में विश्वास व्यक्त कर रही है, इससे कांग्रेस के कुनबे में खलबली मची हुई है।भाजपा प्रदेश प्रभारी एवं राष्ट्रीय महासचिव अरूण सिंह ने कहा कि भाजपा का परिवार बढ़ रहा है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में लोग देश को तरक्की करते हुए देख रहे हैं। इस बार के चुनावों में गहलोत सरकार विदा होने वाली है, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बौखलाए हुए हैं और ईडी के कर्मचारियों व अधिकारियों के खिलाफ अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल कर रहे हैं। इस बार भाजपा सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए ऐतिहासिक बहुमत से सत्ता में आएगी।

नेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री कोड आफ कंडक्ट का उल्लंघन कर रहे है। आचार संहिता लगने के बाद सत्तारूढ पार्टी इस प्रकार घोषणाए नहीं कर सकती लेकिन ईडी की जांच से घबराए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इस प्रकार झूठी घोषणाएं कर रहे है। कांग्रेस से जुड़े हुए लोग अपमान और झूठ की राजनीती से तंग होकर भाजपा परिवार में शामिल हो रहे हैं। कांग्रेस के भ्रष्टाचार की धीरे-धीरे कलई खुल रही है और पूरी कांग्रेस में हलचल हैं। प्रदेश की जनता ने मन बना लिया है कि अब डबल इंजन की सरकार बनानी है और भ्रष्टाचार से मुक्ति पानी है। पार्टी में शामिल होने वाले नेताओं में जयपुर की पूर्व महापौर ज्योति खंडेलवाल जयपुर से सांसद का चुनाव लड चुकी है वहीं चन्द्रशेखर बैद के पिता चन्दनमल बैद कांग्रेस पार्टी से 8 बार विधायक व वित्त मंत्री रहे है। राजस्थान की राजनीति में एक प्रतिष्ठित नेता के रूप में उनकी पहचान रही है। वहीं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष रविन्द्र सिंह भाटी के अलावा चूरू जिले के राजगढ के पूर्व विधायक व कांग्रेस के वरिष्ठ नेता नंदलाल पूनियां, झुंझुनूं के मंडावा से 2003 व 2008 में निर्दलीय प्रत्याशी रहे डॉ. हरी सिंह सहारण, राजस्थान धरोहर एवं प्रौन्नति प्राधिकरण के उपाध्यक्ष व कांग्रेस नेता सांवरमल महरिया, लक्ष्मणगढ कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष जितेन्द्र सिंह, पूर्व आईपीएस अधिकारी केसर सिंह शेखावत तथा पूर्व आईपीएस अधिकारी भीम सिंह बीका ने भाजपा की नीतियों में विश्वास जताते हुए पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

सीएम संवैधानिक पद पर बैठकर कर्मचारियों को दे रहे हैं गालीः सी.पी. जोशी

राज्य में इस बार ऐतिहासिक बहुमत से बनेगी भाजपा की सरकारः अरूण सिंह

इन लोगों ने करी भाजपा सदस्यता

» इस अवसर पर आम आदमी पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता जयपाल सिंह मांडोता, आप यूथ विंग के प्रदेश उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह राठौड, आप पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं जिला संयुक्त सचिव सोमेन्द्र सिंह चौहान के अलावा आल इंडिया टैंट डेकोरेशन एवं वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रवि जिंदल और कांग्रेस के वार्ड 41 के अध्यक्ष किशोर सिंह शेखावत भी भाजपा में शामिल हुए। सभी को प्रदेशाध्यक्ष सी.पी. जोशी ने पार्टी का दुपट्टा ओढाकर व मिठाई खिलाकर पार्टी की सदस्यता दिलाई।

संक्षिप्त समाचार

निःशुल्क मोतियाबिंद जांच एवं नेत्र लेंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन आज

चमकता राजस्थान/भुसावर (राजवीर सिंह)। भारत विकास परिषद की स्थानीय शाखा की ओर से जिला अंधता निवारण समिति व स्थानीय अग्रवाल समाज के सहयोग से प्रकाश चंद मित्तल सेठो की हवेली भुसावर की स्मृति में 29 अक्टूबर रविवार को प्रातः 9:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक कस्बे के सेठ मांगीलाल भडाके वाले अग्रवाल समाज भवन में पांचवा निःशुल्क मोतियाबिंद जांच एवं नेत्र लेंस प्रत्यारोपण शिविर लगाया जाएगा। शाखा कोषाध्यक्ष राजेश गोयल ने बताया कि शिविर में शंकरा आई हॉस्पिटल जयपुर के चिकित्सकों द्वारा 40 वर्ष या उससे अधिक उम्र के मरीजों के नेत्रो की जांच करके सर्जरी के लिए चुने गए लोगों का आधुनिक तकनीक द्वारा शंकरा आई हॉस्पिटल जयपुर में निःशुल्क आपरेशन किया जाएगा। मोतियाबिंद का आपरेशन कराने वाले रोगियों को चश्मा, जयपुर के हॉस्पिटल में भोजन, आवास व परिवहन की सुविधा भी निःशुल्क रहेगी। गौरतलब है कि शाखा की ओर से गत सत्र में चार शिविर लगाकर 182 रोगियों के निःशुल्क मोतियाबिन्द आपरेशन करवाये गये थे।

दशहरा के दिन से शुरू होकर आज टेसू और झेंझी का विवाह संपन्न

चमकता राजस्थान/धौलपुर (रामदास तरुण)। बाडी 28 अक्टूबर हिंदू परंपरा अनुसार दशहरा के दिन से प्रतिवर्ष टेसू एवं झेझी का त्यौहार मनाया जाता है इस दिन बच्चे रंग-बिरंगे बड़े एवं छोटे टेसू झेंझी बाजार से लाकर पहले दिन दीपक में तेल, घी डालकर 5 दिन की ज्योत जलाई जाती है। और 5 दिन के लिए दीपक जलाकर टेसू एवं झेझी के गीत गाए जाते हैं गली मोहल्लो के बच्चे टेसू झेंझी को ले जाकर गीत गाकर घर-घर दरवाजे पर जाकर भिच्चा मांगते हैं इसके 5 दिन बाद टेसू और झेझीं का विवाह किया जाता है जिसमें तीन भामर टेसू की एवं चार भामर झेंझी की डाली जाती है। इस खुशी के मौके पर जब टेसू झेंझी का ब्याह करते हैं। तो बच्चे बुजुर्ग एवं नौजवान साथी खुशी का इजहार करते हैं।और साथ में आतिशबाजी करते हैं। उसके बाद बच्चे झेंजी को और टेसू को सजाया जाता है एवं पुआ और पंजीरी का प्रसाद लगाया जाता है। वह सभी में बांटा जाता है। क्योंकि आज दिनांक 28 अक्टूबर को चंद्र ग्रहण लग रहा है। इस वजह से टेसू एवं झेझी को एक दिन पूर्व आज चार दिन में ही सिराया गया। वही आरती शिवहरे कांग्रेस सेवादल जिला अध्यक्ष धौलपुर ने बताया कि टेसू और झेंझी, वह दो शख्यिसत जिनकी शादी के लिए बच्चे घर- घर जाकर रुपए एकत्रित करते हैं, लेकिन शादी के कुछ समय बाद ही टेसू को एक षड़यंत्र के तहत मौत के घाट उतार दिया जाता है। हर किसी को इस कहानी के आगाज लेकर अंत तक का पता है, लेकिन इसके बाद भी इसे बच्चे बच्ची पूरी शिद्दत के साथ खेलते हैं। इसे लड़के और लड़कियां की टोली टेसू और झेंझी को लेकर घर- घर जाकर रुपए एकत्रित करते हैं और पूर्णिमा के दिन इनकी शादी होती है। यह परंपरा महाभारत कालीन से संम्पूर्ण इंडिया में आज भी जीवित है। हालांकि अंतर बस इतना आया कि अब यह कॉलोनी और सोसाइटी की जगह यह मोहल्ले मैं और बस्ती बची हुई है। यह एक खेल है जिसके माध्यम से शादी की रीति- रिवाज की शिक्षा दी जाती है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने किया चूड़ो की बस्ती भड़ला के आंगनवाड़ी केन्द्र का अवलोकन

- **दूसरा दशक के सहयोग से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं ने सीखी फाइव कॉर्नर्स की नई गतिविधियां**

चमकता राजस्थान

बाप(कविकान्त खत्री)सौर्य ऊर्जा कम्पनी ऑफ राजस्थान लिमिटेड के सहयोग से दूसरा दशक द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की एक दिवसीय एक्सपोजर विज़िट का आयोजन किया गया। सभी कार्यकर्ताओं ने चूडो की बस्ती भड़ला में तैयार किए गए मॉडल आंगनवाड़ी केंद्र की गतिविधियों का अवलोकन किया। अवलोकनकर्ताओं में तेलियों की ढाणी बाप, कानासर, नूरे की भुर्ज, गोयलो की ढाणी, कालू खा की ढाणी, खाखुरी, अजेरी आदि गांवों की 12 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और एएनएम शामिल थीं। इस अवसर पर मॉडल आंगनबाड़ी की कार्यकर्ता चिरमी ने दूसरा दशक के सहयोग से केंद्र पर आयोजित होने वाली गतिविधियो के बारे में विस्तार से जानकारी दी। दूसरा दशक की अमरू चौधरी ने कार्यकर्ताओं को मॉडल आंगनवाड़ी पर संचालित किए जा रहे 5 विशेष कॉर्नर्स चित्रकला, पुस्तकालय, स्थानीय सामग्री, अस्पताल तथा गुड़िया का घर के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इन गतिविधियों से केंद्र पर बच्चों के ठहराव में वृद्धि हुई है तथा नियमित केंद्र आने के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने कहा कि केंद्र पर शिक्षण के साथ-साथ बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास में भी बदलाव नजर आ रहा है। आंगनवाडी कार्यकर्ता मरवत, मेंहदी, जमीला, राधा आदि ने कहा कि मॉडल आंगनवाड़ी पर होने वाली गतिविधियों को हम अपने केंद्र पर भी संचालित करेंगे। एएनएम सुनीता, सरोज ने कार्यकर्ताओं को गर्भवती महिलाओ, बच्चो का टीकाकरण के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि हमे इनका नियमित टीकाकरण करवाना अनिवार्य हैं। इसके साथ ही गर्भवती महिलाओ की पूरी जांच समय पर करवाए, ताकि मां बच्चे स्वस्थ रहे और सरकारी योजनाओं का लाभ भी ले सके। विज़िट के लिए आई तेलियों की ढाणी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता हेमासिंह ने केंद्र पर मौजूद पुस्तकें फुलवारी, किलकारी, तरंग तथा उमंग के माध्यम से शाला पूर्व शिक्षा के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि छोटे बच्चों मे सीखने की ललक होती हैं। उन्हें किताबों में उपलब्ध चित्रों के माध्यम से सिखाए। दूसरा दशक की समन्यक प्रीती राठौड़ ने बताया की सभी कार्यकर्ताओं ने बच्चो के साथ बच्चे बन कर फाइ×फ कॉर्नर्स की गतिविधियो से विभिन प्रकार की गतिविधियां सीखी। विजिट के दोरान कार्यकर्ताओ ने गांव की महिलाओं द्वारा मतदाता जागरूकता आभियान के तहत जनकारी दी गई और शत प्रतिशत मतदान की शपथ ली।

इस कार्यक्रम में धाई, कलसुम, जीनी, अणदाराम आदि ने अनुभव शेयर किए।

जिला धौलपुर के बाड़ी उपखंड में विधानसभा चुनाव 2023 को लेकर पैरामिलिट्री फोर्स और पुलिस फोर्स कर रही है फ्लैग मार्च

चमकता राजस्थान/धौलपुर (रामदास तरुण)। धौलपुर के बाड़ी उपखंड में पैरामिलिट्री फोर्स और पुलिस फोर्स कर रही है फ्लैग मार्च, फ्लैग मार्च में अधिकारियों के द्वारा मतदाताओं से भयमुक्त होकर मतदान करने का किया जा रहा है । आग्रह परसराम धर्मशाला, वाईपास, होद बृजेश महाविद्यालय, बाजार होते हुए गुमट बाड़ी, रामू तिराहा, हास्पिटल, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बाड़ी से कसाई पाडे, आदि जगहों पर फ्लैग मार्च उप जिला कलेक्टर यशवंत मीणा, डीएसपी महेंद्र कुमार मीणा उप्फ्ढ्ऋके कंपनी कमांडर इन्द्र मोहन , थाना प्रभारी लक्ष्मण सिंह द्वारा कसाई पाडा मस्जिद के पास चारों अधिकारियों के द्वारा , यशवंत मीणा, ऊरढ महेंद्र कुमार मीणा द्वारा समझाते हुए कहा कि आप भय मुक्त होकर मतदान करें। और यह भी बताया गया कि किसी भी वहकावे में आकर मतदान नहीं करें। रिश्वत देने वाला व रिश्वत लेने वाला भी बराबर के दोसी माने जाते हैं। और दोनों की सजा का प्रावधान भी हैं लगभग 10 वार बाड़ी क्षेत्र में फ्लैग मार्च हो चुका है विधानसभा चुनाव 2023 के मद्देनजर नेतृत्व कर रहे हैं। आईजी रुपिंदर सिंघ, धौलपुर पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार चौधरी ले रहे हैं पल-पल का फीडबैक।

भारद्वाज ने 'पुष्पेन्द्र भारद्वाज के 51 प्रण, सांगानेर बनेगा नंबर वन' घोषणा-पत्र किया लॉन्च

51 प्रण' से होगा सांगानेर की हर समस्या का समाधान : भारद्वाज

- **शिक्षा, सेहत, रोजगार पर किया फोकस**

जयपुर।(का. सं)

सांगानेर विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी पुष्पेन्द्र भारद्वाज ने शनिवार को 'पुष्पेन्द्र भारद्वाज के 51 प्रण, सांगानेर बनेगा नंबर वन' घोषणा-पत्र लॉन्च किया। इस दौरान भारद्वाज ने अगले 5 सालों में किए जाने वाले कार्यों को लेकर अपना विजन भी बताया। भारद्वाज ने मीडिया को बताया कि उन्होंने एक माह के दौरान 'जनसेवक आपके द्वार' यात्रा निकाली थी। इस दौरान उन्होंने 410 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर 45000 लोगों से मुलाकात की थी, उस दौरान जो लोगों की समस्याएं थीं, उनके आधार पर उन्होंने यह 51 प्रण का घोषणा पत्र बनवाया है। उन्होंने बताया कि इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के साथ ही महिला, युवा और वरिष्ठ नागरिकों के साथ ही मूलभूत सुविधाओं पर फोकस किया है। उन्होंने बताया कि चुनाव जीतने पर वे सांगानेर में सैटेलाइट अस्पताल का तय समय में निर्माण करवाएंगे, विधानसभा में नया जनाना अस्पताल और प्रमुख क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खुलवाएंगे। छात्रों के लिए वातानुकूलित पुस्तकालय का निर्माण कराएंगे। वहीं प्रमुख बाजारों और पार्कों में मुफ्त वाई-फाई की सुविधा देंगे। खिलाड़ियों के लिए राज्य स्तरीय स्टेडियम का निर्माण भी कराया जाएगा। कपड़ा व्यापारियों के लिए आधुनिक टैक्सटाइल पार्क बनवाएंगे। महिला आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षण केन्द्र सहित समस्त विधानसभा में सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था भी की जाएगी। विधानसभा में धार्मिक स्थलों का सौंदर्यीकरण और जीर्णोद्वार कराया जाएगा। इसके अलावा सभी कॉलोनियों में बीसलपुर पेयजल लाइन, सीवर लाइन, सीतापुरा से अजमेर गेट तक मेट्रो लाइन का विस्तार, सांगानेर और मानसरोवर में शहरी शहरी बस सेवा सहित कई विकास के कार्य कराए जाएंगे। भारद्वाज ने बताया कि पूरे 5 साल की सक्रियता के चलते उन्हें गली गली की समस्याएं पता है और 5 दिन पहले सांगानेर आए भजनलाल को गलियों का भी नहीं पता।

- **20 साल से थे हाल-बेहाल, 5 साल बेमिसाल**

» भारद्वाज ने कहा कि सांगानेर की जनता पिछले 20 साल से मूलभूत सुविधाओं के लिए भी मोहताज थी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के आशीर्वाद से बिना पद पर रहते हुए 5 साल के दौरान सांगानेर विधानसभा में विकास के अनेक कार्य कराए। इनमें आधुनिक सिटी पार्क, 18 इंग्लिश मीडियम स्कूल, 2 नए सरकारी कॉलेज, सैटेलाइट हॉस्पिटल की स्वीकृति, पचास बैड का नया आयुर्वेदिक हॉस्पिटल, नया आयुर्वेदिक कॉलेज, नया हॉर्टिकल्चर कॉलेज, 3 नए जनता क्लीनिक, हजारों स्ट्रीट लाइट, सैकड़ों नई सड़कों का निर्माण, अधिकतर पार्कों में जिम और झूले, पृथ्वीराज नगर का विकास, जयपुर चौपाटी और विधानसभा की कई कॉलोनियों में बीसलपुर पानी सहित कई कार्य शामिल हैं।

गौरतलब है कि भारद्वाज की 5 साल सक्रियता के चलते सांगानेर में कांग्रेस मजबूत नजर आ रही है।

भारत विरोधी विमर्शों का प्रतिकार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष की तरफ अग्रसर है। विजय दशमी के दिन स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ हेडगेवार ने इसकी स्थापना की थी। विजय दशमी के दिन प्रभु श्री राम ने लंका विजय की थी। असत्य अहंकार अधर्म पर यह सत्य और धर्म की विजय थी। डॉ हेडगेवार संघ के माध्यम से भारत के इसी स्वाभिमान को जागृत करना चाहते थे। संघ लगातर इस दिशा में बढ़ रहा है। यह दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है। विजय दशमी पर मुख्य समारोह नागपुर में होता है। इस समारोह में सर संघचालक जी का मार्गदर्शन मिलता है। इस बार प्रसिद्ध गायक पद्मश्री शंकर महादेवन मुख्य अतिथि थी। यह नया अनुभव था। उन्होंने भगवती श्लोक से अपना संबोधन शुरू किया। मैं रहूं ना रहूं यह देश रहना चाहिए,, इस गीत से संबोधन पूरा किया। कहा कि भारत का पूरी दुनिया में प्रभाव बढ़ा है। दुनिया में भारतीयों को बहुत सम्मान मिलने लगा है।

डॉ मोहन भागवत ने जी 20 शिखर सम्मेलन का उल्लेख किया। भारत के सनातन चिंतन के प्रति दुनिया का आकर्षण बढ़ा है। वसुधैव कुटुम्बकम का विचार भारतीय विरासत है। इस पर अमल से ही विश्व में शांति सौहार्द सम्भव है। अन्य कोई मार्ग नहीं है। इसी प्रकार पर्यावरण समस्या का समाधान भी भारतीय चिंतन से हो सकता है, लेकिन इसके पहले भारत को अपनी विरासत पर गर्व करना सीखना होगा। उसके अनुरूप आचरण करना होगा। सरकार इस दिशा में कार्य कर रही है। प्रशासन और समाज को भी जागरूक होना पड़ेगा। आज भी कल्चरल कम्युनिस्ट सनातन विरोधी सक्रिय हैं। इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है। ऐसे तत्व भारत को कमजोर करना चाहते हैं। भारतीय संस्कृति का विरोध करते हैं। भारत विरोधी विमर्श चलाते हैं। देश हित में इनका प्रतिकार करना होगा भारत के विशिष्ट विचार व दृष्टि के कारण संपूर्ण विश्व के चिंतन में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की दिशा जुड़ गई। भारत को विश्व के मंच पर एक प्रमुख राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठा मिल रही है। एशियाई खेलों में पहली बार भारत ने सौ अधिक पदक जीते हैं। चंद्रयान की सफ़लता उभरते भारत की शक्ति,बुद्धि तथा युक्ति का प्रमाण है। वैज्ञानिक तथा उनको बल देनेवाला नेतृत्व संपूर्ण देश में अभिनंद हो रहा है। हमारे संविधान की मूल प्रति के एक पृष्ठ पर जिनका चित्र अंकित है ऐसे धर्म के मूर्तिमान प्रतीक श्रीराम के बालक रूप का मंदिर अयोध्याजी में बन रहा है। बाइस जनवरी को मंदिर के गर्भगृह में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी। श्रीराम अपने देश के आचरण की मर्यादा के प्रतीक है, कर्तव्य पालन के प्रतीक है। स्नेह व करुणा के प्रतीक है।

राम मंदिर में श्रीरामलला के प्रवेश से प्रत्येक हृदय में अपने मन के राम को जागृत करते हुए मन की अयोध्या सजे व सर्वत्र स्नेह, पुरुषार्थ तथा सद्भावना का वातावरण उत्पन्न हो ऐसे, अनेक स्थानों पर परन्तु छोटे छोटे आयोजन करने चाहिए। भारत भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति के पथ आगे बढ़ रहा है। भारत की पहचान को, हिंदू समाज की अस्मिता को बनाए रखने का विचार स्वाभाविक है। विरासत के अनुरूप भारत का सामर्थ्य बढ़ाने की आवश्यकता है। इस दिशा में देश अग्रसर हो रहा है। यह प्रगति बाधित नहीं होनी चाहिए। विश्व में आतंक, युद्ध की समस्या है। यूक्रेन के अथवा गाझा पट्टी के युद्ध जैसे कलहों का कोई निदान दिख नहीं रहा है। प्रकृतिविरुद्ध जीवनशैली, अमर्यादित उपभोगों के कारण नई–नई शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। विकृतियां व अपराध बढ़ रहे हैं। आत्यंतिक व्यक्तिवाद के कारण परिवार टूट रहे है। प्रकृति के अमर्याद शोषण से प्रदूषण, वैश्विक तापमानवृद्धि, ऋतुक्रम में असंतुलन व तज्जन्य प्राकृतिक हादसे प्रतिवर्ष बढ रहे हैं। आतंकवाद, शोषण और अधिसत्तावाद को खुला मैदान मिल रहा है। अपनी अधूरी दृष्टि को लेकर विश्व इन समस्याओं का सामना नहीं कर सकता यह स्पष्ट हुआ है। इसलिए अपने सनातन मूल्यों व संस्कारों के आधार पर, भारत अपने उदाहरण से वास्तविक सुख शांति का नवपथ विश्व को दिखाए यह अपेक्षा जगी है। सुरक्षा, पर्यावरण, जन सांख्यिकी व विकास की दृष्टि से इस पूरे क्षेत्र को एक इकाई मानकर हिमालय क्षेत्र का विचार करना होगा। भारतीय मूल्यों पर तथा भारत की समग्र एकात्म दृष्टि पर आधारित विकास पथ भारत को बनाना पड़ेगा। यह भारत के लिए सर्वथा उपयुक्त तथा विश्व के लिए भी अनुकरणीय प्रतिमानक बन सकेगा।

समाज में भी कृषि, उद्योग और व्यापार के, तत्संबंधित सेवाओं के क्षेत्र में, सहकारिता व स्वरोजगार के क्षेत्रों में, नए सफल प्रयोगों की संख्या वृद्धि भी निरंतर हो रही है। परंतु प्रशासन के क्षेत्र में, सभी क्षेत्रों में चिंतन करनेवाले व दिशा देने वाले बुद्धिधर्मियों में, इस प्रकार की जागृति की और अधिक आवश्यकता है। शासन की 'स्व' आधारित युगानुकूल नीति, प्रशासन की तत्पर, सुसंगत व लोकाभिमुख कृति तथा समाज का मन, वचन, कर्म से सहयोग व समर्थन ही देश को परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ाएगा। भारत के उत्थान का प्रयोजन विश्व–कल्याण ही रहा है। जबकि कम्युनिस्ट विश्व की सभी सुव्यवस्था,मांगल्य, संस्कार, संयम के विरोधी हैं। ऐसे तत्व प्रचार व प्रसार के माध्यमों तथा अकादमियों को हाथ में लेकर देशों की शिक्षा, संस्कार,राजनीति व सामाजिक वातावरण को भ्रमित करते हैं। इन आसुरी शक्तियों को समाज और राष्ट्र विरोधी शक्तियों का सहयोग मिलता है। मणिपुर हिंसा में यही दिखाई दिया था। लगभग एक दशक से शांत मणिपुर में अचानक यह आपसी फूट की आग कैसे लग गई। मणिपुरी मैतेयी समाज और कुकी समाज के इस आपसी संघर्ष को सांप्रदायिक रूप देने का प्रयास क्यों और किसके द्वारा हुआ। वर्षों से वहाँ पर सबकी समदृष्टि से सेवा करने में लगे संघ जैसे संगठन को बिना कारण इसमें घसीटने का प्रयास करने में किसका निहित स्वार्थ है। इस सीमा क्षेत्र में नागाभूमि व मिजोरम के बीच स्थित मणिपुर में ऐसी अशांति व अस्थिरता का लाभ प्राप्त करने में किन विदेशी सत्ताओं को रुचि हो सकती है। समस्या के समाधान के लिए बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता रहेगी। डॉ मोहन भागवत ने कहा कि संघ के स्वयंसेवक तो समाज के स्तर पर निरंतर सबकी सेवा व राहतकार्य करते हुए समाज की सज्जनशक्ति का शांति के लिए आह्वान रहे हैं। सबको अपना मानकर, सब प्रकार की कीमत देते हुए समझाकर, सुरक्षित, व्यवस्थित, सद्भाव से परिपूर्ण और शान्त रखने के लिए ही संघ का प्रयास रहता है. एकता की परंपरा हमारी विरासत में हमको मिली है. हमारी सर्व समावेशक संस्कृति है.पूजा, परंपरा, भाषा, प्रान्त, जातिपाती इत्यादि भेदों से ऊपर उठकर, अपने कुटुंब से संपूर्ण विश्वकुटुंब तक आत्मीयता को विस्तार देनेवाली हमारी आचरण की व जीवन जीने की रीति है।

वैचारिक भाव-भूमि के प्रसंग

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

कई फोटो अपने में बड़ा भाव और संदेश देने वाले होते हैं। चित्रकूट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जगतगुरु रामभद्राचार्य की भेंट के चित्र ऐसे ही हैं। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री मोदी को श्रीराम मंदिर अयोध्या के लोकार्पण का आमंत्रण दिया गया। इसके बाद शुक्रवार को चित्रकूट में मोदी और रामभद्राचार्य की मुलाकात हुई। यह विलक्षण संयोग है। अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने में इन दोनों महानुभावों का योगदान उल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री ने रामभद्राचार्य की तीन पुस्तकों का विमोचन भी किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि चित्रकूट की पावन और पुण्य भूमि पर मुझे दोबारा आने का अवसर मिला है। यह अलौकिक क्षेत्र है। इसके बारे में हमारे संतों ने कहा है कि चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिया लखन समेत अर्थात चित्रकूट में प्रभु श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण जी के साथ नित्य निवास करते हैं। उन्होंने चित्रकूट में कांच मंदिर (श्री रघुवीर मंदिर) में दर्शन–पूजन किया। प्रधानमंत्री ने नए सुपर स्पेशलिटी अस्पताल का शुभारंभ किया। चित्रकूट में अरविंद भाई मफतलाल की सौवीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उन पर आधारित डाक टिकट जारी किया। रामभद्राचार्य ने श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर के संबंध में 400 से अधिक प्रमाण सुप्रीम कोर्ट को दिए थे। उन्होंने प्राचीन ग्रंथों के प्रामाणिक उद्धरण प्रस्तुत किये थे। रामभद्राचार्य ने दावे के साथ कहा था कि वाल्मीकि रामायण के बाल खंड के आठवें श्लोक से श्रीराम जन्म के बारे में जानकारी शुरू होती है। यह सटीक प्रमाण है। इसके बाद स्कंद पुराण में राम जन्म स्थान के बारे में बताया गया है। राम जन्म स्थान से तीन सौ धनुष की दूरी पर सरयू माता बह रही हैं। एक धनुष चार हाथ का होता है। आज भी यदि नापा जाए तो जन्म स्थान से सरयू नदी उतनी ही दूरी पर बहती दिखेंगी। अथर्व वेद के दशम कांड के इकतीसवें अनु वाक्य के द्वितीय मंत्र में स्पष्ट कहा गया है कि आठ चक्रों व नौ प्रमुख द्वार वाली श्री अयोध्या देवताओं की पुरी है। उसी अयोध्या में मंदिर महल है। उसमें परमात्मा स्वर्ग लोक से अवतरित हुए थे। ऋग्वेद के दशम मंडल में भी

इसका प्रमाण है। तुलसी शतक में कहा गया है कि बाबर के सेनापति व दुष्ट यवनों ने राम जन्मभूमि के मंदिर को तोड़कर मस्जिद का ढांचा बनाया और बहुत से हिंदुओं को मार डाला। तुलसीदास ने तुलसी शतक में इस पर दुख भी प्रकट किया है। मंदिर तोड़े जाने के बाद भी हिंदू साधु रामलला की सेवा करते थे। इस पूरे प्रसंग से रामभद्राचार्य जी की विलक्षण प्रतिभा का अनुमान लगाया जा सकता है। उनका अध्ययन अद्भुत है। इसी के साथ वह समाज के कल्याण में भी समर्पित हैं। जिस शिशु की दो माह बाद ही नेत्र ज्योति चली जाए, उसके लिए जीवन अंधकारमय हो जाता है। लेकिन ऐसे अनेक विलक्षण लोग हैं, जिन्होंने इस अभाव को बाधक नहीं बनने दिया। प्रबल इच्छाशक्ति के साथ उन्होंने अभाव को प्रभाव में बदल दिया। आंखें न होने के बाबजूद अपना जीवन प्रकाशित किया, साथ में समाज को भी रोशनी दिखाई। रामभद्राचार्य ऐसी ही विभूति हैं। नेत्र ज्योति चली जाने से उनके परिवार में चिंता व निराशा थी। शिशु के भविष्य को लेकर बड़ी आशंका थी। तब किसी ने यह कल्पना नहीं की होगी कि एक दिन यह बालक समाज को मार्ग दिखायेगा। श्रीराम भूमि पर उनके तर्क अकाट्य थे। सभी लोग उनके अध्ययन व ज्ञान को देखकर हतप्रभ थे। भारतीय दर्शन व प्रज्ञा का चमत्कार प्रभावित करने वाला था। ज्ञानचक्षु जीवन आलोकित हो जाता है। इसे प्रत्यक्ष देखा जा रहा था। अति विशाल भारतीय वैदिक वांग्मय के अलावा अन्य सभी ग्रन्थों की पृष्ठ संख्या तक उनकी स्मृति में थी। उन्होंने इस विलक्षण ज्ञान को अपने तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज का भी वह अनवरत मार्गदर्शन कर रहे हैं। विद्या का सतत दान कर रहे हैं। वह विश्वविद्यालय के कुलाधिपति है। इस रूप में वह विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं। वह प्रभावी व ज्ञानवर्धक रामकथा के वाचक हैं। इस रूप में समाज को प्रभु राम की मर्यादा का संदेश देते हैं। वह तुलसीपीठ के संस्थापक और पीठाधीश्वर हैं। चित्रकूट स्थित इस संस्थान के माध्यम से केवल धार्मिक ही नहीं, सामाजिक सेवा के कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। वह चित्रकूट में जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलाधिपति हैं। यह तब है जब अभाव के कारण सत्रह वर्ष की उम्र तक उनको औपचारिक शिक्षा का अवसर नहीं मिला था।

उन्होंने कभी भी ब्रेल लिपि का उपयोग नहीं किया। सत्रह वर्ष की उम्र में ही उनके अनेक ग्रन्थ कंठस्थ हो गए थे। उनका बाईस भाषाओं पर अधिकार है। अभी तक 100 से अधिक पुस्तकें लिख चुके हैं। संस्कृत व्याकरण, न्याय वेदांत, रामायण आदि के विशेषज्ञ हैं। चित्रकूट में प्रधानमंत्री ने तुलसी पीठ के जगद्गुरु की तीन पुस्तकों अष्टाध्यायी भाष्य', रामानंदाचार्य चरितम' और 'भगवान श्री कृष्ण की राष्ट्रलीला' का विमोचन किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि इससे भारत की ज्ञान परंपरा और मजबूत होगी। संस्कृत शाश्वत है। समय ने संस्कृत को परिष्कृत किया। लेकिन इसे कभी प्रदूषित नहीं किया जा सका। प्रधानमंत्री मानते हैं कि संस्कृत का परिपक्व व्याकरण निहित है। मात्र 14 महेश्वर सूत्रों पर आधारित यह भाषा शास्त्र और सहस्त्र की जननी रही है। भारत के सभी राष्ट्रीय आयाम में संस्कृत का योगदान है। हजारों साल पुराने गुलामी के दौर में भारत की संस्कृति और विरासत को नष्ट करने प्रयास किया गया। गुलामी की मानसिकता वालों का संस्कृत के प्रति वैर–भाव था। जबकि संस्कृत परंपराओं की भाषा है। यह हमारी प्रगति और पहचान की भी भाषा है। प्रधानमंत्री ने अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग लेने के लिए श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट द्वारा दिए गए निमंत्रण का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जिस राम मंदिर के लिए आपने अदालत के अंदर और बाहर इतना योगदान दिया है, वह भी तैयार होने जा रहा है। अमृतकाल में देश विकास और विरासत को साथ लेकर चल रहा है। केन–बेतवा लिंक परियोजना, बुंदेलखंड एक्सप्रेस–वे और रक्षा गलियारे से पूरे बुंदेलखंड का कायाकल्प हो रहा है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

पत्रकारिता की पुरातन परंपरा के आखिरी दीप स्तंभ

राकेश प्रवीर

संपूर्ण निष्ठा व समर्पण से किसी एक उद्देश्य व ध्येय को निश्चित कर अगर जीवन समर्पित कर दिया जाए, तो सफलता व ख्याति निश्चित हैं। ऐसे ही शख्सीयत का नाम पं रामजी मिश्र 'मनोहर' हैं जिन्होंने पत्रकारिता को कर्म के रूप में अपनाकर ऐसी लकीर खींची कि आज भले ही वे हमारे बीच नहीं है मगर उन्हें बिहार की पत्रकारिता का शलाकापुरुष और पाटलिपुत्र की धरोहर के तौर पर जाना जाता है। यह सम्मान मनोहर जी ने पांच दशकों से भी अधिक समय तक बिहार की पत्रकारिता को अपनी मेधा का बहुलांश समर्पित कर व पत्रकारिता के आदर्शों का उच्चतम कीर्तिमान स्थापित कर हासिल किया। मनोहर जी का जन्म रामनवमी, सन 1927 ई. को पटना सिटी (प्राचीन पाटलिपुत्र) के कालीस्थान मुहल्ले जो सम्प्रति डा. वी डी मिश्र पथ से जाना जाता है, में हुआ था। उनके पिता डा. विश्वेशर दत्त मिश्र एक खातिप्राप्त चिकित्सक होने के साथ ही स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी और साहित्यानुरागी थे और उन्होंने 'बिहार बंधु' तथा 'प्रजा–बंधु', 'भूदेव' तथा 'डाक्टर भाई' जैसे पत्रों के प्रकाशन में तमाम संकटों के बावजूद अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। ऐसे में मनोहर जी को पत्रकारिता का संस्कार सहज ही अपने पिताश्री से विरासत में प्राप्त हुआ था। मनोहर जी के बड़े सुपुत्र व बिहार के स्वनाम ख्यात पत्रकार ज्ञानवर्द्धन मिश्रा का कहना है कि उन्हें पत्र–पत्रिकाओं से छात्र जीवन में ही लगाव हो गया था। सन 1944–45 ई. में मनोहर जी ने हस्तलिखित त्रैमासिक 'भारती' का संपादन किया, जो तत्कालीन विद्वानों द्वारा समादृत हुई थी। सन 1945 ई. में वे दैनिक 'आर्यावर्त' के सिटी संवाददाता रहे। सन 47 ई. में उनकी नियुक्ति दैनिक 'राष्ट्रवाणी' के उप संपादक के पद पर हुई। उन्होंने कुछ दिन 'दैनिक विश्वमित्र' और 'प्रदीप' के संपादकीय विभाग में भी कार्य किया। सन 1950 ई. में वे 'आर्यावर्त' के कार्यालय संवाददाता बने। फिर मुख्य संवाददाता, उप समाचार संपादक, समाचार संपादक आदि पदों पर कार्य करते हुए संयुक्त सम्पादक के पद पर प्रतिष्ठित हुए। मनोहर जी के लिए हमेशा पद से ज्यादा कार्य महत्वपूर्ण रहा, इसलिए वे पद के कभी मोहताज नहीं रहे। ज्ञानवर्द्धन मिश्रा के अनुसार मनोहर जी ने बिहार के बाहर के अनेक प्रतिष्ठित पत्रों और समाचार संस्थाओं का भी प्रतिनिधित्व किया। इनमें संवाद एजेंसी पी टी आई के साथ ही नवभारत टाइम्स, आज, सन्मार्ग, भारत आदि उल्लेखनीय हैं। वे 'पाटलिपुत्र परिषद' और 'पटना नगर हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। 'पटना नगर जिला कांग्रेस' और 'बिहार हिन्दी पत्रकार संघ' के भी वे वर्षों तक सचिव रहे। मगर उनका मन पत्रकारिता में ही हमेशा रचा–बसा रहा। मनोहर जी सच्चे अर्थों में एक कर्मयोगी थे और उनका व्यक्तित्व मनस्विता के अनुपम वैशिष्ट्य से परिपूर्ण था। उनके प्रथम दर्शन का आ''ाद आज भी मेरे मन में ताजा है। 1988 में वह जून का महीना था। बचपन से ही बिहार से निकलने वाले

पं. रामजी मिश्र 'मनोहर' की पुण्यतिथि पर विशेष।

हर पत्र–पत्रिकाओं में रामजी मिश्र 'मनोहर' का नाम देखता–पढ़ता आया था। पटना में आए कुछ महीना ही हुआ था। 'आज' दैनिक के सीनियर उप संपादक अमरेन्द्र कुमार के साथ पटना जंक्शन से फ्रेजर रोड में आ रहा था। अचानक एलआईसी बिल्डिग के बगल में नाश्ते और मिठाई के लिए प्रसिद्ध दुकान 'न्यू पिंटू' के पास एक शख्स को देखर कर अमरेंद्र जी रूक गए। मैं तब कुछ महीने पहले ही 'आज' अखबार से जुड़ा था, और तब मेरी उम्र भी काफी कम थी। सो, सहमा हुआ अमरेन्द्र जी के पीछे खड़ा रहा। अचानक मेरी ओर देखते हुए एक मेरे कंधे पर हाथ रख कर मनोहर जी ने कहा–'मैं रामजी मिश्र मनोहर', क्या नाम है आपका? मैं थोड़ा घबड़ा गया, मगर अमरेंद्र जी ने परिचय कराया। उस पहली मुलाकात में ही मैं मनोहर जी का कायल हो गया। मैं चम्पारण का रहने वाला हूं, यह जान कर मनोहर जी काफी खुश हुए। फिर हम दोनों को लेकर दुकान के अंदर चले गए। मना करने के बावजूद उन्होंने रसगुल्ला लाने का आदेश दिया। मिठाई खिलाने के बाद पान की दुकान पर ले गए। उसके बाद मनोहर जी 'आज' अखबार के दफ्तर में जब भी आते थे, तो मुझसे मिलना नहीं भूलते थे। मनोहर जी ने अपनी पुस्तक 'दस्ताने पाटलिपुत्र' की एक प्रति किसी से मुझ तक भेजवाई। दो–तीन बाद मेरे कार्यालय में आते ही उन्होंने पूछा–'पुस्तक आपने पढ़ी।' मैं झेंप गया, क्योंकि तब तक मैंने पुस्तक का दो–चार पन्ना भी नहीं पढ़ पाया था। मैंने वादा किया कि दो दिन के अंदर पूरी पुस्तक पढ़ कर आपको केवल बताऊंगा ही नहीं बल्कि उस पर कुछ अपने अखबार के लिए लिखूंगा भी। मनोहर जी रचित 'दास्ताने पाटलिपुत्र' में पाटलिपुत्र के सम्बंध में जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक तथ्य उपलब्ध हैं, वे अन्यत्र दुर्लभ हैं। पाटलिपुत्र की धरोहरों के संरक्षण की उन्हें हमेशा चिन्ता रहती थी। एक बार अपने अखबार के लिए पटना सिटी स्थित 'चाणक्य की गुफा' पर एक रिपोर्ट बनाने के लिए गया। वहां कई स्थानीय लोगों के साथ मनोहर जी से भी मिला। पाटलिपुत्र के इतिहास और साहित्य की दास्तान तो मानों उन्हें कण्ठस्थ था। वे सिर्फ पत्रकार ही नहीं थे, उन्हें बिहार की सांस्कृतिक धरोहरों के एक सजग प्रहरी तथा बिहार की राजधानी पटना की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियों के भी ऊर्जावान केंद्र के रूप में भी जाना जाता था। पाटलिपुत्र की परंपरा में कई वर्षों से बंद पड़े 'कौमुदी महोत्सव' को युवकों को प्रेरित कर शुरू कराया। कोई भी साहित्यिक–सांस्कृतिक आयोजन हो, मनोहर जी की उपस्थिति वहां अनिवार्य तौर पर होती थी। होली के मौके पर होने वाले 'महामूर्ख सम्मेलन' और मनोहर जी की भूमिका को पटना के लोग आज भी नहीं भूले हैं। मनोहर जी को ऐतिहासिक अन्वेषण से भी बड़ा लगाव था। वे दिल से चाहते थे कि पाटलिपुत्र अपने अतीत की परम्परा के साथ ही आधुनिक युग में भी शिखर पर रहे। बिहार रिसर्च सोसायटी के तत्वावधान में आयोजित कतिपय संगोष्ठियों में उनके विद्ववतापूर्ण संभाषण को सुनने का मुझे भी मौका मिला है। उनकी वक्तृत्व कला अदभुत थी। क्या बोलना चाहिए, कितना बोलना चाहिए और कैसे बोलना चाहिए, इस पर न केवल उनकी पकड़ थी, बल्कि एकाधिकार भी था। उनके ऐतिहासिक तथ्यों के प्रस्तुतिकरण पर इतिहास के बड़े–बड़े प्राध्यापकों और अध्येयाताअें को भी आश्चर्य होता था। आज मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि पटना जो कभी पाटलिपुत्र था, कभी अजीमाबाद और कभी कुसुमपुर, पुष्पपुर और इन सबकी कहानियां मनोहर जी के पास सही ऐतिहासिक तथ्यों के साथ सुरक्षित–संरक्षित था। दरअसल ऐतिहासिक तथ्यों को देखने–परखने का मनोहर जी का अपना अनुभवजन्य नजरिया था। मनोहर जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का दर्शन उनके द्वारा स्थापित 'बिहार पत्रकारिता संस्थान एवं संग्रहालय' (अब रामजी मिश्र मनोहर मीडिया फाउंडेशन) में सहज रूप से होता है। पत्रकारिता संस्थान के रूप में एक संग्रहालय देकर उन्होंने राष्ट्रभाषा और पत्रकारिता की महती सेवा की । इस संग्रहालय के बारे में मनोहर जी का कहना था– ''पत्र–पत्रिकाओं के संकलन का शौक मुझे बचपन से था। अपने स्कूली जीवन में ही सन 1943 ई. में अपने कुछ मित्रों, जिनमें शिल्पी स्व. दामोदर प्रसाद अम्बष्ठ, स्व. गिरिधारीलाल शर्मा गर्ग और स्व. केदार नाथ बरेरिया आदि के सहयोग से गांधी सरोवर, पटना सिटी में रामनवमी के मेले के अवसर पर अखिल भारतीय पत्र–पत्रिका प्रदर्शनी का आयोजन किया था। यह आयोजन काफी सफल रहा था और तब मुझे इसके लिए काफी श्लाघा मिली थी।'' मनोहर जी ने एक साक्षात्कार में कहा था– ''मेरे मामा व गुरु पं, प्रमोदशरण पाठक के पास पुरानी पत्र–पत्रिकाओं का अच्छा संग्रह था, जो उन्होंने मुझे दे दिया। इसके अलावा मेरे पास विभिन्न विषयों की लगभग चार–पांच हजार दुर्लभ पुस्तकें थीं। मैंने इनका लोकार्पण संग्रहालय के नाम से करके इसे सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट के तहत पंजीयन करा दिया और इसके संचालन के लिए विद्वानों की समिति संघटित कर दी। अब फाउंडेशन ने ट्रस्ट का रूप ले लिया है और शहर के प्रमुख पत्रकार व हितैषी इसका संचालन करते हैं।आज देश–विदेश के विभिन्न भागों से शोधार्थी यहां आते रहते हैं और संग्रहालय से लाभ उठा कर संतुष्ट होकर लौटते हैं। उन शोधार्थियों को मदद कर मुझे आनंद और संतोष का अनुभव होता है।''

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी मनोहर जी वाकई नई पीढ़ी के बौद्धिक मार्गदर्शक थे। जब भी मैं इनके सम्पर्क–सान्निध्य में आया हर बार वे अपने रचनात्मक सुझाव–परामर्श से मेरे बौद्धिक परिष्कार का प्रयास करते थे। मिलने पर अक्सर पूछा करते थे–'आज कल क्या पढ़ रहे हैं?' उनका सुझाव होता था– ''एक पत्रकार को रूटीन रिपोर्टिंग के अतिरिक्त भी कुछ लिखना–पढ़ना चाहिए।'' मुझे यह कहते हुए कोई संकोच नहीं है कि मनोहर जी पत्रकारिता की पुरातन परम्परा के आखिरी दीप स्तंभ थे जिन्होंने अपने प्रकाश से अनेक नवोदितों को प्रेरित–प्रोत्साहित किया। मैं जब भी उनसे मिला, त्यागभावना, सादगी, सदाष्यता, सरलता, संवेदनशीलता आदि का उनमें दर्शन हुआ। मनोहर जी का व्यक्तित्व वाकई 'मनोहारी' था। वे सही मायने में पाटलिपुत्र की धरोहर थे।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

अमरत्व का संधान है संस्कृत

हृदयनारायण दीक्षित

अंग्रेजी आग्रही लोगों के लिए शुभ सूचना नहीं है। लेकिन संस्कृत प्रेमी प्रसन्न हैं। लिथुआनिया यूरोप का विकसित और समृद्ध देश है। उत्तर–पूर्वी यूरोप में बाल्टिक सागर के किनारे स्थित यह देश संप्रति संस्कृत भाषा के आकर्षण में है। जर्मन विद्वान मैक्समूलर संस्कृत और ऋग्वेद पर मोहित थे ही। विलियम जोन्स भी संस्कृत प्रेमी थे। अब लिथुआनिया ने विश्वास प्रकट किया है कि इसकी भाषा और संस्कृति का जुड़ाव भारत की भाषा संस्कृत से है। लिथुआनिया में संस्कृत के विद्वान विटिस विदुनस भारत आए हैं। वे विल्नियस यूनिवर्सिटी के एशियन एवं बहुसांस्कृतिक अध्ययन विभाग में प्रतिष्ठित विद्वान हैं। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एक भाषण दिया है। उन्होंने भारत और लिथुआनिया में भाषाई समानता के तथ्य सामने रखे। लिथुआनिया आगे शोध करना चाहता है। कार्यक्रम में भारत लिथुआनिया की राजदूत डायना मिकेविसीन भी मौजूद थीं। उन्होंने कहा कि संस्कृत, लिथुआनियाई भाषा की करीबी बहन है। उन्होंने जानकारी दी कि भारत में लिथुआनिया के दूतावास ने देशभर में दोनों भाषाओं के सम्बंधों की पहचान के लिए प्रयास प्रारम्भ किए हैं। उन्होंने बताया कि दोनों भाषाओं की समानताएं शब्दावली तक ही सीमित नहीं है। व्याकरण की संरचना में भी समानताएं हैं। भारत में ज्ञान, विज्ञान, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, नाटक, संगीत, कला, योगदर्शन और अनुभूति की भाषा संस्कृत है। पाली प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए हिन्दी का विकास हुआ। अनेक भाषा विज्ञानी विकास क्रम में भिन्न मत भी रखते हैं। लेकिन प्राकृत के वैयाकरण वररूचि ने लिखा है 'प्रकृतिः संस्कृतं/तस्मादुदभूतं प्राकृतं।' संस्कृत प्रकृति है। प्राकृत उसी से प्रकट हुई है। भारतीय संस्कृति का विकास और कथन संस्कृत में हुआ था। हिन्दी ने उसे आगे बढ़ाया। संस्कृत को मृतभाषा कहने वाले मित्र दयनीय हैं। भाषा कभी नहीं मरती। उसे बोलने वाले ही भाषा प्राणतेज रहित होते हैं। हिन्दी संस्कृत की उत्तराधिकारी है। बेशक विदेशी सत्ता ने संस्कृति व संस्कृत को दुर्बल बनाया लेकिन संस्कृत को मिटाया नहीं जा सकता। संस्कृत अमरत्व का संधान है। यूरोपीय सभ्यता का केन्द्र ईसाईयत है। ईसाईयत का विरोध या ईसाईयत की निकटता दोनों परस्पर पूरक हैं। भारतीय सभ्यता सोच विचार और चिन्तन का केन्द्र वैदिक दर्शन है। वैचारिक विविधता तर्क प्रतितर्क और सतत शोध इस संस्कृति की प्रकृति है। संस्कृत हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में शोध और बोध की विरासत है। अंग्रेजी ऐसी अनुभूति नहीं देती। लेकिन भारत में अंग्रेजी की ठसक है। अनेक हिन्दी विद्वान भी अंग्रेजी को अंतरराष्ट्रीय भाषा मानते हैं। गांधी जी हिन्दी लिखने बोलने में कठिनाई अनुभव करते थे। उन्होंने समर्थकों से कहा था 'अंग्रेजी की कोई जरूरत नहीं। वायसराय से भी अपनी

भाषा में बात करो।' बंकिम चन्द्र भारतीय भाषाओं के प्रेमी थे। उन्होंने लिखा, 'हम चाहे कितनी ही अंग्रेजी लिख पढ़ लें, अंग्रेजी हमारे लिए मरे हुए शेर की खाल ही सिद्ध होगी। हम उसे पहनकर सिंह गर्जना नहीं कर सकते।' अंग्रेजी ने हम सबके भीतर आत्महीन भाव पैदा किया है। अंग्रेजी संस्कारों के कारण ही हम वास्तविक इतिहास बोध से दूर हैं। स्वाधीनता संग्राम के समय अंग्रेजी प्रतीकों से भारत की टक्कर थी।

संस्कृत और हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की समृद्धि समय का आ''ान है। संविधान सभा में पं. नेहरू ने भी स्वीकार किया था कि संस्कृत भारत ही नहीं एशिया के बड़े क्षेत्र में विद्वानों की भाषा थी। आज संस्कृत की स्थिति वैसी नहीं है। संस्कृतविद् प्रायः आधुनिकता की अपेक्षा से दूर है और आधुनिकता प्रेमी संस्कृत से। संस्कृत आधुनिक विज्ञान, तकनीकी, उद्यम और प्रबोधन की भाषा भी हो सकती है। प्राचीन भारत का सारा ज्ञान विज्ञान, हर्ष विषाद और प्रसाद प्रकट करने वाली भाषा आखिरकार आधुनिक जगत की लोकप्रिय भाषा क्यों नहीं हो सकती? चुनौती बड़ी है। संस्कृत जैसा पूर्ण अनुशासन किसी भी भाषा में नहीं है लेकिन संस्कृत कालवा' घोषित हो रही है। हम विशिष्ट संस्कृति के कारण ही विश्व के अद्वितीय राष्ट्र हैं। संस्कृति और संस्कृत परस्पर एक हैं। संस्कृत और संस्कृतिनिष्ठ नया वातावरण बन रहा है। यह प्रसन्नता का विषय है।

भारत में संस्कृत ही प्रार्थना की भाषा है। विवाह और अन्य संस्कारों की भी। इसी तरह मुस्लिम मित्रों के यहां संस्कार आदि की भाषा अरबी है। रोमन कैथोलिक में लैटिन है। यहूदियों में हिब्रू है। आर्थोडाक्स ईसाई ग्रीक का प्रयोग करते हैं। भिन्न–भिन्न सभ्यताओं में प्रार्थना और संस्कार की भाषाएं भिन्न–भिन्न हैं। हरेक भाषा के संस्कार होते हैं। वैदिक भाषा के अपने संस्कार हैं। वैदिक समाज ने इसी भाषा को संवाद का माध्यम बनाया था। उन्होंने इसी भाषा माध्यम को समाज गठन का उपकरण भी बनाया। इसी भाषा से दैनिक जीवन के कामकाज भी किए और इसी भाषा के माध्यम से सूर्य, चन्द्र, नदी, पर्वत और वनस्पति आदि से भी संवाद बनाया। यज्ञ कर्मकाण्ड में भी इसी भाषा का प्रयोग होता।

अभिनय कला भारत में ही विकसित हुई। भरत मुनि ने संस्कृत में उसे नाट्य शास्त्र बनाया। इसे नाट्यवेद की संज्ञा मिली। दर्शन भारत में देखा गया। द्रष्टा ऋषि कहे गये। 'अर्थशास्त्र' संस्कृत में ही उगा पहली बार। कौटिल्य 'अर्थशास्त्र' के प्रथम प्रवक्ता हैं। आयुर्विज्ञान भी संस्कृत में प्रकट हुआ। ज्ञान विज्ञान और कला कौशल सहित राष्ट्रजीवन के सभी अनुशासन संस्कृत में ही प्रवाहमान हुए। सामूहिक हुए। एक से अनेक हुए। अनेक से एक हुए। संस्कृत ने एक संस्कृति दी और एक संस्कृति ने एक राष्ट्र। भतृहरि ने 'शब्द और अर्थ के सभी संकल्पों और विकल्पों को व्यवहारजन्य ही बताया था। आस्था ही नहीं इहलौकिक कर्मो के संधान का उपकरण भी संस्कृत ही है। संधान जैसा शब्द दूसरी भाषा में नहीं है। अनुसंधान इसी का छोटा भाई जान पड़ता है। संस्कृत में उल्लेखनीय अनुसंधान हुए हैं। भारत विरोधी मित्र संस्कृत को 'डेड लैंगुएज' कहते हैं। विलियम जोन्स ने संस्कृत को लैटिन आदि अनेक भाषाओं से समृद्ध बताया था। लेकिन संस्कृत को छोटा करने के लिए इंडो–यूरोपीय नाम की एक और प्राचीन भाषा का नाम उछाला था। लेकिन इस भाषा का कोई अता–पता नहीं है। हिन्दी प्राणवान भाषा है। हिन्दी के पास संस्कृत का उत्तराधिकार है और पालि, प्राकृत, अपभ्रंश का सिंगार। यह भारतीय संस्कृति की संवाहक है। यह भारत की राष्ट्रभाषा राजभाषा है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी यहां अंग्रेजी लाई थी। उसके बाद अंग्रेजी सत्ता आई। भाषा अपने साथ संस्कार भी लाती है। हम अपने प्रिय का स्मरण कर रहे हों, वहीं प्रियजन अचानक आ जाए। हम चहक उठते हैं कि आइए! आइए! आपकी लम्बी उम्र है, आपकी ही चर्चा हो रही थी। अंग्रेजों ने अंग्रेजी में सिखाया 'ओह! थिंक दि डेविल, डेविल इज हियर– शैतान को सोंचा, शैतान आ गया।' अंग्रेजी संस्कार कमोवेश ऐसे ही हैं। ब्रिटिश सत्ता के दौरान अंग्रेजी कप्तान, कलक्टर और अदालतों की भाषा बनी। प्रत्येक भाषा अपने लोक और संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है। भाषा की अपनी संस्कृति होती है और हरेक संस्कृति की अपनी भाषा। संस्कृत हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाएं भारतीय संस्कृति प्रकट करती हैं। संस्कृति भी इन्हीं भाषाओं में खिलती है और ज्ञान विवेक बनती है।

(लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

ताकि आपका बच्चा बन जाए लाडला

बच्चे बेहद मासूम और भोले होते हैं। उनके मासूम सवाल और बाल सुलभ हरकतें किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं लेकिन यही बच्चे जब कहना नहीं मानते या फिर कंट्रोल से बाहर हो जाते हैं तो किसी भी मां-बाप के लिए मुसीबत से कम नहीं होते। आखिर ऐसे बच्चों को कैसे कंट्रोल किया जाए, बता रही हैं ।

बच्चे को अनुशासित करने से पहले उसे सही और गलत व्यवहार के बीच फर्क करना सिखायें। इससे उसमें स्व- अनुशासन की भावना विकसित होगी। बच्चे को हमेशा रोकें-टोकें नहीं। ऐसा करने से धीरे-धीरे उस पर आपकी बातों का असर कम हो जाएगा और वह मन ही मन सोचेगा कि मम्मी की तो आदत ही है, हमेशा रोकते-टोकते रहने की। बच्चे को अनुशासित करने के क्रम में आप नकारात्मक के बजाय सकारात्मक तरीके अपनायें। उसे डांटने-फटकारने की जगह प्यार से समझाने का असर ज्यादा गहरा होगा। बच्चे को अनुशासित करने के लिए आप जो भी नियम बनायें, उस पर हमेशा अडिग रहें तो बच्चे भी उसकी गंभीरता को समझेंगे। यह धारणा बिल्कुल गलत है कि बच्चे को हमेशा डांट-फटकार कर ही अनुशासित किया जा सकता है। जब आपका बच्चा गलत व्यवहार करे, तब भी आप अपने गुस्से पर नियंतण्ररखें और उसे समझायें कि ऐसा व्यवहार करना ठीक नहीं है। बच्चे को उसकी गलती का अहसास कराना बहुत जरूरी है। आप उसे जरूर बतायें कि उसकी गलत आदतों की वजह से आप उससे नाराज है। जब तक उसे अपनी भूल का अहसास नहीं होगा, तब तक उसकी आदत में सुधार नहीं आएगा। अगर बच्चा बड़ों का सम्मान नहीं करता तो उसे समझायें कि यह गलत है। आप खुद भी अपने बड़ों का सम्मान करें। यह बच्चों के लिए अनुकरणीय होता है। अगर वह आपकी बात नहीं मानता तो सजा के तौर पर उससे कुछ समय के लिए बातचीत बंद कर सकती हैं। अगर आपका बच्चा आपकी अनुपस्थिति में अनुशासनहीन व्यवहार करता है तो इसके लिए उसके साथ थोड़ी सख्ती बरतनी जरूरी है। जब भी वह गलती करने के बाद आपसे झूठ बोले तो आप उसे चेतावनी दे सकती हैं कि दोबारा ऐसी गलती नहीं होनी चाहिए, वरना उसे इसकी कड़ी सजा मिलेगी।

जूइॅलरी है सदा के लिए

कभी-कभी मानसून बड़ा डल और बोझिल सा मालूम पड़ता है। ऐसे में अपनी चमक बिखेरने के लिए चुनें डायमंड जूइॅलरि। इसकी चमक से बादलों के बीच बिजली की कौध की तरह दमक उठेगा आपका व्यक्तित्व, पर इनके बीच एमराल्ड (पन्ना), रूबी (माणिक) और सैफ्रयर (नीलम) को न भूल जाएं, क्योंकि चमक का असल आकर्षण तो रंगों के बीच ही है। डायमंड्स जब व्हाइट गोल्ड में जड़े हों और हों खूबसूरत डिजाइन्स जिनमें कलर्ड प्रेशस और सेमी प्रेशस स्टोन्स सजे हों तो बात ही निराली हो जाती है। ऐसी डिजाइन्स, जूइॅलरि व उसे पहनने वाले शख्स के व्यक्तित्व में सही संतुलन पैदा करती है यानी वह जूइॅलरि अपने आपमें खूबसूरत होने के साथ व्यक्तित्व को भी आकर्षण प्रदान करती है। जूइॅलरि डिजाइनर पूनम सोनी ऐसी डिजाइन्स की वकालत करते हुए कहती हैं,

'इस तरह की जूइॅलरि विक्टोरियन लुक देती है। इसमें छिपी है क्लासिक अपील और जब आप इसे पहनती हैं तो आपके व्यक्तित्व में भी वही आकर्षण सज जाता है।' सोनी आगे कहती हैं, 'जिन महिलाओं को नवीनतम प्रयोग करने का शौक है, वे इस प्रकार की जूइॅलरि किसी भी अवसर पर पहन सकती हैं।'

जावेरी एंड कंपनी के निदेशक चंद्रेश जावेरी कहते हैं, 'ऐसे जूइॅलरि पीस जिनमें एक ही कलर्ड सेमी प्रेशस या प्रेशस स्टोन स्टडेड हों, की बात ही अलग है। ऐसी जूइॅलरि अद्वितीय आकर्षण और स्टाइल प्रदान करती है। यह चलन के अनकूल होने के साथ ही बोल्ड भी लगती है। इसे पहनने पर व्यक्तित्व की खूबसूरती उभरकर आती है। ऐसा नहीं लगता कि जूइॅलरि की चमक में व्यक्ति की खूबसूरती खो गयी है। यही वजह है कि ऐसी जूइॅलरि आजकल ग्राहकों के बीच बेहद लोकप्रिय है।'आधुनिक नयी डिजाइन्स में कलर्ड स्टोन्स से सजी व्हाइट गोल्ड डायमंड जूइॅल्रि पहनने के लिए एथनिक पहनावा जरूरी नहीं है। इसे आप किसी भी आधुनिक पहनावे के संग पहन सकती हैं। साड़ी से लेकर कॉकटेल गाउन तक सभी पर यह खूबसूरत लगती है। यहां तक कि लंच पार्टी के लिए अपनी मनपसंद ड्रेस के साथ भी आप यह जूइॅल्रि बड़े स्टाइल के साथ पहन सकती हैं। हर पहनावे के साथ यह जंचती है। जूइॅलरि सौंदर्य बढ़ाने के साथ ही समृद्धि और वैभव को जाहिर करती है। किसी भी अन्य कला की तरह इसे भी प्रेरणा की जरूरत होती है। जिस तरह एक फ्रेम में सजने के बाद तस्वीर की मोहकता बढ़ जाती है, वैसा ही कुछ जूइॅल्रि के साथ है। व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है जूइॅलरि। अच्छी जूइॅलरि धारण करने पर गरिमामय व्यक्तित्व के साथ ही आपका क्लास और स्टाइल भी जाहिर होता है। वह चुनें जो पसंद हो जब आप चलन के बजाय अपनी पसंद के अनुरूप जूइॅलरि का चुनाव करती हैं तो वह जूइॅलरि ऐसी होगी, जिसमें सदाबहार आकर्षण होगा। समय के साथ ट्रेंड बदलता रहता है, पर आपका व्यक्तित्व हमेशा एक सा रहता है। व्हाइट गोल्ड डायमंड और एक कलर के स्टोन्स स्टडेड हल्की जूइॅलरि ऐसी आधुनिक भारतीय महिलाओं के मिजाज के अनुरूप हैं, जो कॅरियर को तरजीह देने के साथ ही अपनी परंपराओं की भी कद्र करती हैं। 21 डायमंड्स डॉट इन की प्रबंध निदेशक रिचा बंसल अपने कलेक्शन के बारे में बताती हैं, 'हमने ऐसी डिजाइन्स पेश की हैं, जिन्हें आप दिन और रात दोनों समय पहन सकती हैं। ऐसे पीसेस को हमने नाम दिया है 'डे एंड नाइट जूइॅलरि'। इसे आप दिन में भी पहन सकती हैं, बस आपको अपनी ड्रेस और हेयर स्टाइल बदलना होगा। लंच पर जाना है तो हल्की शिफॉन की साड़ी के साथ डायमंड व एक कलर के स्टोन स्टडेड हल्की जूइॅलरि परफेक्ट रहेगी। त्योहार या पारिवारिक आयोजन के मौके पर वही जूइॅलरि आप लहंगे के साथ पहन सकती हैं। कलर्ड स्टोन्स आपकी जूइॅलरि को प्लेन और एकरस होने से बचाते हैं। उनसे आपकी संपूर्ण छवि में रोचकता बढ़ जाती है। रंगों में हमेशा कुछ खास बात होती है, चाहे वे फूल हों या आभूषण, रंगों से उनकी खूबसूरती और बढ़ जाती है। पूनम सोनी कहती हैं, 'ऐसी जूइॅल्रि बहुआयामी होती है। वह लाउड नहीं होती, पर सौंदर्यबोध के साथ रुचि जगाती है।' जूइॅलरि डिजाइनर वरुणा डी जानी कहती हैं, 'कल्पनाशीलता को जूइॅलरि डिजाइन्स में उतारने के लिए काफी हद तक मायने रखती है तकनीक। ऐसी जूइॅलरि में फ्लोरल डिजाइन्स काफी शामिल की जाती हैं। इनमें जाली वर्क भी शामिल किया जाता है, क्योंकि उन्हें व्हाइट गोल्ड में डिजाइन करना आसान रहता है। ऐसे जूइॅलरि पीस उन लोगों को आकर्षित करते हैं, जिन्हें जिंदगी में परिष्कृत चीजें पसंद हैं।'

कई बीमारियों को दावत देती विटामिन बी- 12 की कमी

विटामिन बी-12 के बारे में हर किसी को जानकारी है, लेकिन ज्यादातर लोगों को पता नहीं कि इसकी कमी से कई बीमारियां हो जाती हैं। इनमें तो कुछ इतनी गंभीर हैं कि जिनसे बच पाना भी मुश्किल है। विटामिन बी-12 की कमी से नर्वस सिस्टम तक फेल हो जाता है। इस विटामिन की कमी उन लोगों में ज्यादा होती है जो मांस-मछली और दूध-दही से बने उत्पादों का सेवन नहीं करते। जो शाकाहारी व्यक्ति दूध-दही से बने उत्पाद नहीं खाते, उनको वेगन्स कहते हैं। वेगन्स में विटामिन बी-12 की तेजी से कमी दिख रही है। विटामिन बी-12 खू न में आरबीसी (राइबोज न्यूक्लिक एसिड) को बनने में मदद करता है। इससे नर्वस सिस्टम ठीक रहता है जिससे डिप्रेशन कम हो जाता है।

विटामिन बी-12 की कमी को दूर करने का एकमात्र कारगर विकल्प यह है कि खाने में मांस-मछली और दूध के उत्पादों को नियमित तौर पर शामिल करें। इससे विटामिन की कमी तो दूर होगी ही, कई बीमारियां भी खुद ही दूर हो जाएंगी विटामिन बी-लक्षण डिप्रेशन होना। वजन कम होना। मेमोरी लॉस होना। मसू ढ़ों से खून आना। शरीर के अंगों में झनझनाहट होना। खून में प्लेटलेट्स की कमी हो जाना, जिसे सक्त्र्पेन साइटोपिनियासक्क कहते हैं। शरीर में खून की कमी हो जाती है तो थकावट और कमजोरी महसूस होने लगती है। कारण विटामिन बी-12 की कमी की सबसे बड़ी वजह मांसाहार का सेवन न करना है। इसके अलावा भी बहुत से कारण हैं जिनकी वजह से शरीर में विटामिन-बी की कमी होती है- जैसे परनिशियस एनिमिया की बीमारी। यह बीमारी शरीर में इंट्रेंसिक फैक्टर की कमी के कारण होती है। कई ऐसी दवाएं जैसे डायबिटीज में प्रयोग होने वाली दवा मेटफर्मिग और एसिडिटी में प्रयोग होने वाली दवाएं भी विटामिन-बी को कम करती हैं। पेट में पाये जाने वाले फिश टेप वार्म और पीआरडीएसेस कीड़े, क्रॉनिक अल्कोहलिक, सीलिएक और बैक्टीरियल ओवर ग्रोथ सिंड्रोम बीमारी और अनुवांशिकी कारण भी शामिल हैं। बचाव मांसाहारी हैं तो इसका नियमित सेवन करें। शाकाहारी हैं तो डेरी उत्पादों का अधिक से अधिक सेवन करें।

अगर बहुत ज्यादा विटामिन बी-12 की कमी है तो डॉक्टर की सलाह पर कुछ दवाएं भी ले सकते हैं। निदान एवं इलाज शरीर में विटामिन बी-12 की कमी की जांच खून के नमूने से किया जाता है। इसे विटामिन बी-12 जांच कहते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि खून की जांच में विटामिन बी-12 की कमी होती है, लेकिन जांच में पता नहीं चलता है। इसलिए इसकी सही जांच के लिए डाक्टर होमोसिस्टीन और मिथाइल सेलोनिक एसिड की जांच कराते हैं। अगर शरीर में विटामिन की कमी है और इस स्थिति में इन दोनों की मात्रा शरीर मे बढ़ी होती है । शरीर में विटामिन बी-12 की कमी है तो इसके लिए कई दवाइयां बाजार में है। इसमें ओरल और इंजेक्शन दोनों है। विटामिन बी-12 की दवाएं काफी सस्ती भी होती हैं।

डेंड्रफ से बनायें दूरी

बालों में डेंड्रफ होना सामान्य समस्या है जो ऑयली और सूखे, दोनों तरह के बालों को प्रभावित करता है। लोगों को डेंड्रफ की समस्या से इसलिए जूझना पड़ता है क्योंकि वे अपने बालों को नियमित रूप से ठीक से नहीं धोते हैं जैसा उन्हें धोना चाहिए। डेंड्रफ मुख्य रूप से तब पैदा होता है जब सर्दी के मौसम में गर्म पानी से बालों को धोया जाता है। डेंड्रफ से बचना है तो रोज स्कल्प को धोकर साफ रखें। बालों को धोने के लिए हमेशा ठंडे पानी का इस्तेमाल करें। जब भी कभी शेम्पू से बालों को धोयें, इस बात की तस्दीक जरूर कर लें कि स्कल्प में कुछ रह तो नहीं गया, क्योंकि स्कल्प की सफाई जरूरी है। जब भी आपके बालों में डेंड्रफ हो तो कभी भी ऑयल या कंडीशनर या फिर किसी भी तरह की तैलीय चीजों का प्रयोग न करें क्योंकि ये चीजें इस समस्या को और बढ़ा सकती हैं। प्रतिदिन बालों को शैम्पू से साफ करें।

जहां तक संभव हो, किसी प्रोफेशनल द्वारा रिकमेंड किये गये मेडिकेटेड एंटी डेंड्रफ शैम्पू का एक महीने तक हफ्ते में दो बार प्रयोग करें। यदि तब भी यह ठीक न हो तो किसी डॉक्टर को दिखायें। किसी भी एंटी डेंड्रफ शैम्पू को बिना किसी डॉक्टरी सलाह के एक महीने से अधिक समय तक प्रयोग न करें। कंघी, ब्रश और तौलिया अलग रखें। डेंड्रफ का इलाज घर पर न करें। डेंड्रफ को हैंडल करना मुश्किल नहीं है बल्कि थोड़ी ज्यादा सावधानी और ध्यान देने की जरूरत होती है।

हेल्थ प्लस सोफा ही नहीं, बेड भी

मेहमानों के लिए वह सोफा और रात में घर पर ठहरने वाले रिश्तेदारों के लिए बेड बन जाता है यानी आप जैसे चाहें, इसका इस्तेमाल कर सकती हैं। साथ ही, इससे स्पेस और पैसा दोनों बचता है। ऐसे बेहतर ऑप्शन को आप घर की सजावट का हिस्सा बनाने से भला कैसे छोड़ सकती हैं। तो बाजार में नए डिजाइन और स्टाइल के सोफे-कम-बेड पर एक नजर डाल लें..

इन दिनों बाजार में मिलने वाले सोफा-कम-बेड लोगों को खूब पसंद आ रहे हैं। दरअसल, इस महंगाई में तीन सीटर सोफा सेट की जगह सोफा-कम-बेड खरीदना उन्हें स्मार्ट इन्वेस्टमेंट भी दिख रहा है जिससे न केवल वे पैसे की बचत कर रहे हैं बल्कि घर की शोभा में भी चार चांद लगा रहे हैं। सोफा-कम-बेड का दो तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सोफे का काम करता है और बेड का भी। इससे जगह भी कम घिरती है यानी खासतौर से छोटे फ्लैट्स के लिए यह फर्नीचर का बेस्ट ऑप्शन है। वैसे भी आउटडेटेड और पुराने स्टाइल के तीन सीटर सोफा सेट अब लोगों को कम ही पसंद आ रहे हैं। दिन में सोफा और रात में बेड। बताइए, किसे नहीं महसूस होगा कि टू-इन-वन काम आने वाले सोफा-कम-बेड को घर लाकर उसने स्मार्ट ग्राहक होने की पहचान दी है! इसके अलावा, विभिन्न डिजाइनों में उपलब्ध सोफा-कम-बेड, इंटीरियर के मामले में भी अब लोगों की पहली पसंद बनता जा रहा है। सोफा-कम-बेड से कमरे का लुक भी बेहतर हो जाता है। यूं तो दुकानों में रेडीमेड सोफा-कम-बेड दिखाई नहीं देते लेकिन किताब में देखकर डिजाइन पसंद करके आप उसे बनवाने का ऑर्डर दे सकते हैं। साधारण सोफा सेट 15 से 20 हजार रुपये के बीच आ जाता है और एक सिंगल बेड कम से कम 10 हजार का। ऐसे में क्यों न 15 हजार रुपये तक में एक सोफा-कम-बेड लेकर जगह और पैसे, दोनों की बचत की जाए! यही नहीं, अन्य सोफा सेट्स की तुलना में सोफा-कम-बेड जगह भी कम घेरता है। तभी तो बड़े शहरों में रहने वाले लोग इसे ही खरीदना पसंद कर रहे हैं। सोफा-कम-बेड में एक बार में कम से कम दो लोग आसानी से सो सकते हैं। यही वजह है कि सिंगल बेड या अलग से सोफा खरीदने से पहले लोग दो बार जरूर सोच रहे हैं। तबादले वाली नौकरियां करने वाले ज्यादातर लोग अलग से बेड और सोफा खरीदने की बजाय सोफा-कम-बेड खरीदना ज्यादा पसंद करते हैं जिससे अगले तबादले के वक्त सामान एक से दूसरी जगह पहुंचाने में उन्हें ज्यादा परेशानियों का सामना न करना पड़े।

सड़कों पर जितने कुत्ते बिल्ली नहीं उससे ज्यादा ईडी और आईटी वाले घूम रहे'

भूपेश बघेल के बाद अशोक गहलोत ने दोहराया

जयपुर/एजेंसी

राजस्थान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के ठिकारों पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की रेड की कार्रवाई पर छत्तीसगढ़ और राजस्थान के मुख्यमंत्रियों ने बेहद तीखी प्रतिक्रिया दी है। शुक्रवार को सीएम अशोक गहलोत ने कहा कि कुत्ते बिल्ली से ज्यादा ईडी और आईटी की टीम छापेमारी के लिए घूम रहे हैं। इससे एक दिन पहले छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल ने एक चुनावी जनसभा में कहा कि छत्तीसगढ़ में छापेमारी करके थक गए। रायपुर, दुर्ग, भिलाई, बिलासपुर, कोरबा में कोई गली मोहल्ला नहीं बचा जहां इन्होंने छापेमारी नहीं की। यहां ना कांग्रेस कार्यकर्ता झूके ना, व्यापारी ना, ना यहां के नेता डरे। बहुत परेशान किया, लेकिन कोई नहीं झुका। आज सड़कों पर जितने कुत्ते बिल्ली नहीं उससे ज्यादा ईडी और आईटी वाले घूम रहे। मुंगेली में सीएम भूपेश बघेल ने नामांकन रैली के दौरान यह बात कही।

उधर, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस प्रमुख गोविंद सिंह डोटासरा ने बृहस्पतिवार को कहा कि उन्होंने कुछ गलत नहीं किया है और वह भर्ती परीक्षा का प्रश्न पत्र कथित रूप से लीक होने से जुड़े धन शोधन मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए तैयार हैं। ईडी ने उनके परिसरों पर आज छापेमारी की। डोटासरा ने सीकर में अपने आवास के बाहर बड़ी संख्या में एकत्रित हुए समर्थकों को संबोधित किया जिन्होंने उनके साथ एकजुटता व्यक्त करने के लिए नारे लगाए।उन्होंने कहा 'सत्यमेव जयते (सच्चाई की ही जीत होती है)।' जयपुर में युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने छापेमारी के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। कांग्रेस के राजस्थान प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा के साथ-साथ कुछ विधायक और अन्य नेता डोटासरा के सीकर स्थित आवास पहुंचे।

संक्षिप्त समाचार

अग्रवाल सभा बाड़ी के तत्वावधान में अंकुर सिंघल अग्रसेन सेवा सदन का भूमि पूजन कार्यक्रम

चमकता राजस्थान/धौलपुर (रामदास तरुण)। धौलपुर के बाड़ी उपखंड में श्री अग्रसेन विद्यापीठ धौलपुर रोड, बाड़ी पर अग्रवाल सभा के तत्वाधान में अंकुर सिंघल अग्रसेन सेवा सदन का भूमि पूजन कार्यक्रम आयोजित किया गया। अग्रवाल सभा बाड़ी के अध्यक्ष मुन्नलाल मंगल द्वारा बताया गया कि पंडित रमेश चंद्र शास्त्री द्वारा विधि विधान के साथ पूजा अर्चना एवं भूमि पूजन करवाया गया। भूमि पूजन कार्यक्रम में अग्रवाल सभा बाड़ी की इकाइयों अग्रसेन सहायता समितिअग्रवाल महिला मंडल अग्रसेन शिक्षा समिति अग्रवाल नवयुवक मण्डल बाड़ी* एवम् अंकुर सिंघल अग्रसेन सेवा सदन के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थिति रहे। कार्यक्रम के दौरान जिला महासमिति के अध्यक्ष मुकेश सिंघल ₹अग्रोहार, पूर्व अध्यक्ष सुनील गर्ग, शिक्षा समिति अध्यक्ष भगवती प्रसाद मित्तल, सहायता समिति अध्यक्ष रामनिवास गर्ग, विष्णु मित्तल मासलपुरिया, विजय गर्ग , श्रीनिवास मित्तल, मोनू मंगल, दीपक गोयल ई ओ एवम् समाज के विभिन्न पदाधिकारी, वरिष्ठ नागरिक तथा युवा साथी उपस्थित रहे।
स्वैच्छिक रक्तदान शिविर की तैयारियों को लेकर हुई महत्वपूर्ण मीटिंग

1 नंवम्बर को वीर हंसराज की द्वितीय पुण्यतिथि पर होगें विभिन्न जनकल्याणकारी कार्यक्रम

चमकता राजस्थान/मनोहरपुर!(खलील कुरैशी)। 1 नवंबर वीर हंसराज की द्वितीय पुण्यतिथि पर विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है इस स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में निम्स अस्पताल और ईएमआरसी अस्पताल द्वारा निशुल्क जांच एवं परामर्श कार्यक्रम भी आयोजित होंगे इसके तहत स्वैच्छिक रक्तदान शिविर की तैयारियों को लेकर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर समिति सदस्यों द्वारा अंबेडकरनगर गंगा माता के मंदिर में मीटिंग का विशेष आयोजन किया गया इस दौरान मीटिंग में गोकुल मोहनपुरिया रमेश अटल पुराण मीना शशिकांत बेनीवाल पुरुषोत्तम बेनीवाल रामस्वरूप बेनीवाल अजय बेनीवाल इंद्र बेनीवाल महेंद्र जाजोरिया हेमराज बेनीवाल मनीष बेनीवाल रामजीलाल बेनीवाल राकेश बेनीवाल कृष्ण अवतार बेनीवाल श्रीनाथ राहुल सुनील बेनीवाल नरेंद्र बेनीवाल गजानंद खटूमरिया इत्यादि मौजूद थे।

16 जनवरी से शुरू होगा प्रभु श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा का समारोह

मुख्य अतिथि की भूमिका में होंगे पीएम नरेंद्र मोदी

अयोध्या।

उत्तर प्रदेश के अयोध्या में मुख्य समारोह से ठीक एक सप्ताह पहले राम मंदिर में राम लला के प्रतिष्ठापन समारोह के लिए वैदिक अनुष्ठान 16 जनवरी 2024 को शुरू होंगे। वाराणसी के वैदिक पुजारी लक्ष्मी कांत दीक्षित 22 जनवरी 2024 को राम लला के अभिषेक समारोह का मुख्य अनुष्ठान करेंगे। ज्योतिषियों और वैदिक पुजारियों से परामर्श के बाद 22 जनवरी को श्री राम जन्मभूमि तीरथ क्षेत्र ट्रस्ट ने दोपहर 12 बजे से 12.45 बजे के बीच राम मंदिर के गर्भगृह में राम लला को विराजमान करने का निर्णय लिया है।

● प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्राण-प्रतिष्ठा समारोह की करेंगे अध्यक्षता

सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्राण-प्रतिष्ठा (अभिषेक) समारोह की अध्यक्षता करेंगे। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत भी मौजूद रहेंगे। राय ने कहा कि राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रोटोकॉल के तहत (प्रधानमंत्री की उपस्थिति में) समारोह में शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि आमंत्रित अतिथि प्रधानमंत्री के जाने के बाद ही राम लला के दर्शन कर सकेंगे।

● ट्रस्ट ने राम लला के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के लिए सभी संप्रदायों के 4,000 संतों को किया है आमंत्रित

राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने कहा, ट्रस्ट ने राम लला के प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के लिए सभी संप्रदायों के 4,000 संतों को आमंत्रित किया है। ट्रस्ट ने समाज के सभी क्षेत्रों के 2,500 प्रमुख लोगों को भी आमंत्रित किया है, जिनमें वैज्ञानिक, परमवीर चक्र पुरस्कार विजेता और उनके परिवार के सदस्य, मृत कार सेवकों के परिवार के सदस्य और कलाकार शामिल हैं। राम मंदिर आंदोलन में अहम भूमिका निभाने वाले लोगों के परिवार के सदस्यों को भी आमंत्रित किया गया है।

● समाचार पत्रों और समाचार चैनलों के 100 से अधिक मालिकों को भी किया है आमंत्रितः चंपत राय

चंपत राय ने कहा कि हमने समाचार पत्रों और समाचार चैनलों के 100 से अधिक मालिकों को भी आमंत्रित किया है। राम जन्मभूमि परिसर में जगह की उपलब्धता के अनुसार लोगों को समारोह के लिए आमंत्रित किया गया है। मेहमानों को अपना आधार कार्ड लाना होगा। चंपत राय ने आगे कहा, 'मेहमानों को राम जन्मभूमि पर करीब 3 घंटे बैठना होगा। मंदिर 23 जनवरी से भक्तों के लिए खोला जाएगा। श्री राम जन्मभूमि तीरथ क्षेत्र ट्रस्ट ने ठंड के मौसम की स्थिति के कारण विभिन्न संप्रदायों के बुजुर्ग प्रमुखों से जनवरी के बजाय फरवरी में अयोध्या आने की अपील भी जारी की है।

चित्तौड़गढ़ में पटवारी 15 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार

● आवास एवं अन्य ठिकानों की तलाशी जारी

जयपुर! (खलील कुरैशी)28 अक्टूबर शनिवार। ए.सी. बी. मुख्यालय के निर्देश पर चित्तौड़गढ़ इकाई द्वारा आज कार्यवाही करते हुये चन्द्रप्रकाश चाष्टा पटवारी पटवार मण्डल कपासन, तहसील कपासन, जिला चित्तौड़गढ़ को परिवादी से 15 हजार रुपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के अतिरिक्त महानिदेशक हेमन्त प्रियदर्शी (कार्यवाहक महानिदेशक) ने बताया कि ए. सी. बी. की चित्तौड़गढ़ इकाई को परिवादी द्वारा शिकायत दी गई कि उसकी पैतृक जमीन के बंटवारे का नामान्तकरण खोलने की एवज में चन्द्रप्रकाश चाष्टा पटवारी पटवार मण्डल कपासन, तहसील कपासन, जिला चित्तौड़गढ़ द्वारा 15 हजार रुपये रिश्वत राशि मांग कर परेशान किया जा रहा है।जिस पर एसीबी, उदयपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस राजेन्द्र प्रसाद गोयल सुपरवीजन में एसीबी चित्तौड़गढ़ इकाई के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कैलाश सांदू के द्वारा शिकायत का सत्यापन किया जाकर आज मय टीम के ट्रेप कार्यवाही करते हुये चन्द्रप्रकाश चाष्टा पुत्र स्व. गणपत लाल शर्मा निवासी महाजनों का मोहल्ला, मरमी, पुलिस थाना राशमी, जिला चित्तौड़गढ़ हाल पटवारी पटवार मण्डल कपासन, तहसील कपासन, जिला चित्तौड़गढ़ को परिवादी से 15 हजार रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है।एसीबी के उप महानिरीक्षक पुलिस राजेन्द्र प्रसाद गोयल के निर्देशन में आरोपी से पूछताछ जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा एसीबी अतिरिक्त महानिदेशक हेमन्त प्रियदर्शी (कार्यवाहक महानिदेशक) ने समस्त प्रदेशवासियों से अपील की है कि भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टोल-फ्री हैल्पलाईन नं. 1064 एवं हँ३रंस्त्रस्त्र हैल्पलाईन नं. 94135-02834 पर 247 सम्पर्क कर भ्रष्टाचार के विरूद्ध अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। एसीबी आपके वैध कार्य को करवाने में पूरी मदद करेगी। विदित रहे कि एसीबी राजस्थान राज्य में राज्य कर्मियों के साथ-साथ केन्द्र सरकार के कार्मिकों के विरूद्ध भी कार्यवाही करने को अधिकृत है।

पहचान छिपाकर की शादी तो 10 साल के लिए जाना पड़ेगा जेल

नयी दिल्ली/एजेंसी। हम अक्सर ऐसी खबर सुनते है कि इस राज्य में एक आदमी ने अपनी असली पहचान जैसे की (धर्म, जाती या मैरिटल स्टेटस) छुपाकर दूसरी लड़की से शादी कर ली है। लेकिन अब ऐसा करना या किसी महिला से संबंध बनाना भारतीय न्याय संहिता के तहत अपराध होगा। केंद्र की मोदी सरकार इस फ्राड को रोकने के लिए नया कानून लाने जा रही है। प्रस्तावीत बिल में ऐसा प्रावधान है कि भारतीय न्याय संहिता के सेक्शन 69 के मुताबिक ऐसा करना छल माना जाएगा और ऐसे मामलों में 10 साल तक की सजा मिलेगी।

सूत्रों के मुताबिक कानूनी मामलों के संसदीय पैनल ने इस संबंध में एक रिपोर्ट तैयार किया है। इसे सरकार एक विधेयक के तौर पर लाएगी। इसके मुताबिक यदि कोई शख्स शादी करने के लिए पहचान छिपाता है या फिर संबंध बनाने के लिए ऐसा करता है तो उसे रेप नहीं माना जाएगा, लेकिन छल माना जाएगा। ऐसे मामलों में 10 साल तक की कैद की सजा का नियम बनाने की तैयारी है। इस सेक्शन में साफ किया गया है कि रोजगार देने, प्रमोशन या फिर शादी का वादा करते हुए पहचान छिपाकर शादी करना छल माना जाएगा। भारतीय न्याय संहिता विधेयक पर स्टैंडिंग कमेटी की ड्राफ्ट रिपोर्ट शुक्रवार को पेश की जाएगी। दरअसल बीते कुछ सालों में ऐसे ढेरों मामले सामने आए हैं, जब लोगों ने अपने शादीशुदा होने की बात को छिपाकर किसी महिला से ब्याह रचा लिया। इसके बाद उत्पीड़न की घटनाओं को अंजाम दिया गया।

इसके अलावा मजहब छिपाकर शादी करने के भी मामले सामने आते रहे हैं। ऐसा पहली बार होगा, जब पहचान छिपाकर शादी करने को अपराध मानते हुए अलग से केस चलाया जाएगा। ऐसे मामलों को कैसे डील किया जाए, इसे लेकर पुलिस पसोपेश में रहती थी। अब इस पर कानून बनने से स्पष्टता होगी कि ऐसे मामलों में किस तरह से ऐक्शन लिया जाए। बता दें कि ऐसे मामलों को एक वर्ग लव जिहाद भी कहता रहा है, जिसमें अंतर्धार्मिक विवाह पहचान छिपाकर किए जाने के मामले सामने आते हैं।

श्री बजरंग सेवा समिति गुमट वाले हनुमान धाम बाड़ी पर एक आम सभा का आयोजन

धौलपुर! (रामदास तरुण)

धौलपुर के बाड़ी उपखंड में बजरंग सेवा समिति की नवीन कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह विद्वान पंडित गौरी शंकर कटारा द्वारा हनुमान जी को साक्षी मानकर शपथ दिलाई गई। एवं दीपावली बाद अन्नकूट के आयोजन पर चर्चा की गई। जिसमें सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया के दीपावली बाद 14 नवंबर को अन्नकूट किया जाएगा। क्योंकि 12 की दीपावली और 13 को अमावस्या है ऐसा विद्वान पंडितों ने बताया 14 तारीख को पड़वा है। प्रतिवर्ष लगातार विगत कई वर्षों से दीपावली बाद अन्नकूट का आयोजन किया जाता

रहा है लेकिन इस बार दीपावली के एक दिन बाद पड़वा पड़ रही है तो 14 तारीख को अन्नकूट का आयोजन किया जाएगा। जिसमें लगभग 10,000 लोगों को अन्नकूट का प्रसाद वितरण किया जाएगा जिसके जिम्मेदारी अग्रवाल नवयुवक मंडल बाड़ी ,कुशवाहा फाउंडेशन बाड़ी, बजरंग सेवा समिति एवं अन्य लोगों द्वारा ली गई। आयोजन बड़ी बस्ती के भामाशाह एवं दानदाताओं द्वारा निरंतर की जा रही है और हम सभी के सहयोग से ही यहअन्नकूट हो रहा है। शपथ ग्रहण के बाद बजरंग सेवा समिति के अध्यक्ष भगवती प्रसाद मित्तल ने कहा की दिव्य एवं भव्य तरीके से अन्नकूट का आयोजन किया जाएगा और मंदिर के विकास के लिए कोई पैसों की कमी आने नहीं दी जाएगी। कार्यकारिणी में भगवती प्रसाद मित्तल अध्यक्ष पूर्व चेयरमैन, विजय कुमार सिंघल डेरी वाले उपाध्यक्ष, राजेंद्र गर्ग उर्फ पप्पू काकरई वाले, महामंत्री सुभाष चंद्र बंसल पिपरोन वाले, संरक्षक रमेश चंद्र शास्त्री, मीडिया प्रभारी रामकुमार चौधरी, सूचना मंत्री विपिन सिंघल, संगठन मंत्री रामवतार शर्मा,चोला प्रभारी संजय बंसल ममोधनिया, एवं कार्यकारिणी सदस्य दुर्गा प्रसाद गर्ग, राजेंद्र कुमार मंगल खन्ना, उमेश सिंघल हलवाई, भूरा सिंह परमार, संजू परमार,नीतू गोयल सीमेंट वाले, महावीर गोयल खड़गपुर वाले, बालकिशन गर्ग उमरेह वाले, मुकेश बंसल कुरगमा वाले, ऋषि कपरेला , महेश चंद्र मंगल पिपरेट वाले, राजू शिवहरे ,धर्मेंद्र चौहान, आनंद सिंघल आदि लोगों को शपथ दिलाई।

जियो का 'इमरजेंसी रिस्पॉस कम्युनिकेशन सिस्टम'

नयी दिल्ली/एजेंसी। रिलायंस जियो ने इंडिया मोबाइल कांग्रेस-2023 में अपना 'इमरजेंसी रिस्पॉस कम्युनिकेशन सिस्टम' डिस्प्ले किया है, जिससे जिंदगियों को बचाया जा सकेगा।

जियो के टू 5जी पर चलने वाला यह 'इमरजेंसी रिस्पॉस कम्युनिकेशन सिस्टम' कई स्तरों पर कम्युनिकेशन का मजबूत करेगा। लोकल संचार व्यवस्था ठप्प हो जाने पर इस सिस्टम में उपग्रह से कनेक्टिड 'कम्युनिकेश टॉवर ऑन व्हील' होगा, जिसे कभी भी, कहीं भी और किसी भी स्थिती में तैनात किया जा सकता है।

सहायता पहुंचाने वाली टीमों के कमांड सेंटर के लिए, रिलायंस जियो ने 'एक्सआर कंपेनियन' नाम का एक ऐप डिजाइन किया है। यह ऐप अपनी सहायता टीमों से रियल टाइम कनेक्ट रहेगा। कमांड सेंटर में ऐप के जरिए वर्क डिस्ट्रीब्यूशन, टू-वे ऑडियो वीडियो कॉलिंग, इमरजेंसी एंबुलेंस कॉलिंग, टीम मूवमेंट, वर्क प्रोग्रेस रिपोर्ट पर रियल टाइम नजर रखी जा सकेगी। अभी इस ऐप में एक साथ करीब 20 टीमों को कनेक्ट किया जा सकता है। जिसे जरूरत पड़ने पर बढ़ाया भी जा सकता है।

दूर बैठे एनडीआरएफ या सहायता अधिकारी, 5जी कनेक्टिड ड्रोन के जरिए दुर्गम स्थानों में हुए नुकसान का जायजा ले सकेंगे। इसके अलावा सहायताकर्मी आपस में बातचीत के लिए वॉयस एक्टिवेटेड 5जी कनेक्टिड डिवाइस का इस्तेमाल करेंगे।

बीपीसीएल को दूसरी तिमाही में 8,243 करोड़ रुपये का मुनाफा

2023-24 की दूसरी तिमाही में फिर से लाभ की स्थिति में

नयी दिल्ली/एजेंसी।

सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) ने चालू वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही के नतीजे का ऐलान कर दिया है। बीपीसीएल ने जुलाई-सितंबर तिमाही में 8,243.55 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया है।

पेट्रोलियम कंपनी बीपीसीएल ने शनिवार को जारी एक बयान में कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही में वह फिर से लाभ की स्थिति में आ गई है। कंपनी को 8,243.55 करोड़ रुपये का एकीकृत शुद्ध लाभ हुआ है। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में कंपनी को 338.49 करोड़ रुपये का घाटा हुआ था। जुलाई-सितंबर तिमाही में रिफाइनिंग और विपणन कारोबार से बीपीसीएल की कर-पूर्व आय 11,283.29 करोड़ रुपये हो गई। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में उसे 123.17 करोड़ रुपये का घाटा हुआ था। हालांकि, बीपीसीएल का राजस्व पिछले साल के 1.28 लाख करोड़ रुपये से गिरकर 1.16 लाख करोड़ रुपये रह गया है। बीपीसीएल के मुताबिक दूसरी तिमाही में उसने रिकॉर्ड 18,887.85 करोड़ रुपये की आमदनी हुई है। इस दौरान कच्चे तेल को ईंधन में बदलने पर कंपनी ने 15.42 डॉलर प्रति बैरल कमाए जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में उसका सकल रिफाइनिंग मार्जिन 22.30 डॉलर प्रति बैरल था। इसके अलावा वित्त वर्ष 23-24 की दूसरी तिमाही में कंपनी की एकल आधार पर एबिटा आय 13,679.21 करोड़ रुपये रही है जबकि वित्त वर्ष 22-23 की समान तिमाही में यह 1,991.41 करोड़ रुपये रही थी।

सफोला बना देश का नंबर 1 ओट्स ब्रांड

कोलकाता/संवाददाता।

मैरिको लिमिटेड के प्रमुख ब्रांडों में से एक, सफोला ओट्स ने महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। कांतार हाउसहोल्ड पैनल डेटा के अनुसार, सफोला ओट्स भारत का नंबर 1 ओट्स ब्रांड बनकर उभरा है। 2011 में अपनी शुरुआत से ही ब्रांड ने भारतीय ग्राहकों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने के लिए ग्राहकों के भरोसे, उनकी समझ और हमेशा कुछ नया करने की परंपरा बनाई। साथ ही 'आपके लिए सबसे बेहतर' खाद्य उत्पादों की पेशकश की है।

सफोला ओट्स प्रमुखता से उभरकर सामने आया है और इसने ग्राहकों के रोजाना के नाश्ते का एक पसंदीदा विकल्प बनते हुए इस कैटेगरी में उल्लेखनीय वृद्धि की है। अपनी शुरुआत से अब तक इस ब्रांड ने बिक्री में उल्लेखनीय रूप से दस गुना की बढ़त देखी है। कांतार हाउसहोल्ड पैनल डेटा के अनुसार, वैल्यू के मामले में सफोला ओट्स की बाजार हिस्सेदारी 43प्रतिशत है और यह सभी प्रतिद्वंद्वियों को पीछे छोड़ रहा है। इस डेटा में बताया गया है कि देश में 11 में से 1 घर में रोजाना ओट्स खाया जाता है। इस बारे में, सौगता गुप्ता, एमडी एवं सीईओ, मैरिको लिमिटेड ने कहा, 'यह उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने और ओट्स कैटेगरी में लीडर के तौर उभरने की हमें बेहद खुशी है। यह हमारी उत्कृष्टता, नवाचार और ग्राहकों की संतुष्टि का प्रमाण है। जब बात स्वाद की आती है तो भारतीय किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करते। इस बात को समझते हुए हमने भारतीयों के अलग-अलग स्वाद को ध्यान में रखते हुए ओट्स का भारतीयकरण कर दिया। इसके साथ ही इसमें सेहत को फायदा पहुंचने वाले काफी सारी चीजें भी मिलाई जा रही हैं। मिलेट्स को एक स्थाई तथा पौष्टिक खाद्य स्रोत के रूप में सरकार के दृष्टिकोण के अनुरूप, हमने अपने उत्पादों की श्रृंखला में मिलेट्स को शामिल किया और अपने सफोला ओट्स रेंज में दो सुपरफूड्स की अच्छाइयों को मिलाया है- ओट्स और मिलेट्स। अपने ग्राहकों को खुशी देने के हमारे वादे ने हमें ओट्स को एक अलग कैटेगरी बनाने के लिए प्रेरित किया। साथ ही भारत के नंबर 1 ओट्स* ब्रांड का प्रतिष्ठित स्थान दिलाने में भी एक अहम भूमिका निभाई। अपने ग्राहकों के विश्वास से हमारा यह सफर और 'आपके लिए सबसे बेहतर उत्पाद' देने का यह वादा यूं ही जारी रहेगा।' सफोला ओट्स अपनी सफलता का श्रेय गुणवत्ता और स्वाद के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को देता है। ग्राहकों ने इस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, विशेष रूप से महाराष्ट्र, केरल और पश्चिम बंगाल जैसे संपन्न बाजारों में ब्रांड को जबरदस्त समर्थन मिला है।

एचपीसीएल व शेवरॉन ने की कैल्टेक्स लुब्रिकेंट्स के लांच के लिए साझेदारी

कोलकाता/संवाददाता।

तेल और गैस उद्योग में सबसे प्रमुख खिलाड़ी, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) और शेवरॉन कॉर्पोरेशन की सहायक कंपनी शेवरॉन ब्रांड्स इंटरनेशनल एलएलसी (शेवरॉन) ने कैल्टेक्स ब्रांड के तहत शेवरॉन के लुब्रिकेंट उत्पादों के लाइसेंस, उत्पादन, वितरण और मार्केटिंग को शामिल करते हुए एक लंबी अवधि का समझौता किया है, जिसमें भारत में शेवरॉन के ट्रेडमार्क वाले हैवोलिन और डेलो ब्रांडेड लुब्रिकेंट उत्पाद भी शामिल हैं।

कैल्टेक्स, शेवरॉन ब्रांड का ही हिस्सा है।

कैल्टेक्स की वैश्विक मान्यता, और इसकी अत्याधुनिक तकनीकी परफॉर्मेंस, इसे दुनिया के सबसे प्रमुख तेल और गैस ब्रांड में से एक बनाती है। शेवरॉन दूसरी सबसे बड़ी तेल और गैस कंपनी है जिसका मुख्यालय संयुक्त राज्य अमेरिका में है, इसके उत्पाद 150 से अधिक देशों में बेचे जाते हैं। शेवरॉन एक ऐसा वैश्विक विक्रेता है जो तैयार लुब्रिकेंट बेचता है, इसके दुनिया भर में 10 ऑफिस और 25 ब्लेंडिंग प्लांट्स हैं।

लॉन्च इवेंट में, शेवरॉन ने मुंबई के भव्य, ऐतिहासिक 'गेटवे ऑफ इंडिया' स्मारक को शानदार विजुअल्स के कैनवास में बदल दिया, जो भारत में उसके प्रवेश का प्रतीक है। शानदार ग्राफिक्स के प्रोजेक्शन ने यहां की संस्कृति को ध्यान में रखकर देश के समकालीन परिदृश्य के अनुसार विरासत स्थल को श्रेष्ठ बना दिया। स्मारक संबंधी इस प्रोजेक्शन ने भारत की प्रगति के लिए ब्रांड की प्रतिबद्धता की सराहना की, जिसका मुख्य विषय - 'कैल्टेक्स यानी प्रतिबद्धता' को दोहराना है।

शेवरॉन इंटरनेशनल प्रोडक्ट्स के उपाध्यक्ष डेनिएल लिंकन ने कहा कि, 'हम बहुत खुश हैं कि हम भारत में अच्छी क्वालिटी के और प्रीमियम कैल्टेक्स उत्पाद ला रहे हैं। एचपीसीएल भारत में एक मार्केट लीडर है, और हम एक साथ मिलकर कैल्टेक्स ब्रांड और अपने प्रीमियम प्रोडक्ट पोर्टफोलियो को मजबूत बनाने की योजना बना रहे हैं। हम आशा करते हैं कि हम एचपीसीएल के साथ एक लंबे समय तक और सफल साझेदारी करें, जो भारत में शेवरॉन के ट्रेडमार्क वाले हैवोलिन और डेलो प्रोडक्ट रेंज सहित, कैल्टेक्स प्रीमियम उत्पादों के साथ उनके उत्पाद को पेश करने में सहायक होगा।'

17.5 एकड़ में फैला, सिलवासा में एचपीसीएल का सबसे आधुनिक विनिर्माण केंद्र कैल्टेक्स लुब्रिकेंट की प्रीमियम रेंज बनाएगा। अत्याधुनिक सुविधा केंद्र तकनीकी विकास और पर्यावरण को बचाए रखने के प्रति एचपीसीएल की प्रतिबद्धता का उदाहरण है।

एचपीसीएल के निदेशक - मार्केटिंग, अमित गर्ग ने कहा कि, 'एचपीसीएल और शेवरॉन के बीच सहयोग से, भारत में एचपी लुब्रिकेंट्स के बाजार में लीडरशिप स्थिति और शेवरॉन की विश्व-स्तरीय विरासत का लाभ उठाते हुए, एचपीसीएल अब प्रीमियम उत्पादों की बढ़त पेशकश की मदद से भारतीय उपभोक्ताओं को बेहतर मूल्य देने के लिए तैयार है। शेवरॉन के साथ हमारा लंबे समय का सहयोग लुब्रिकेंट्स और ग्रीस के उत्पादन, वितरण और मार्केटिंग में एचपीसीएल की विशेषज्ञता पर आधारित है। आज की दुनिया में, मॉर्डन इंजन अधिक एडवांस इंजन ऑयल की मांग करते हैं, ताकि वे मोटर चालकों की पूरी क्षमता को दिखा सकें। एचपीसीएल और शेवरॉन एक प्रीमियम प्रोडक्ट पोर्टफोलियो देने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो न केवल उद्योग के मानकों को पूरा करता है बल्कि उससे भी बेहतर परिणाम सुनिश्चित करता है।'

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं

नयी दिल्ली/एजेंसी।

इजराइल-हमास युद्ध को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में जबरदस्त उबाल के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम में आज कोई बदलाव नहीं हुआ, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिंदुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर पर रहा।

पूर्वी रेलवे ने कोलकाता में किया 10वें रोजगार मेले का आयोजन

अधिक रोजगार सृजन से कमाई के अवसर बढ़े

कोलकाता/संवाददाता।

पूर्वी रेलवे ने कोलकाता में डॉ. बीसी रॉय ऑडिटोरियम, सियालदह में रोज़गार मेले का आयोजन किया, जिसमें केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय, अतिरिक्त महाप्रबंधक सुमित सरकार, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी जरीना फिरदौसी, सियालदह डीआरएम दीपक निगम और केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने कहा कि इस देश के युवाओं को रोजगार प्रदान करना सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में इस 10वें रोजगार मेले तक लगभग 6,30,000 नौकरियां प्रदान की गईं।

पूर्वी रेलवे के अतिरिक्त महाप्रबंधक सुमित सरकार ने सभी नए रोजगार पाने वालों को शुभकामनाएं दी और कहा कि केंद्र सरकार के भीतर सबसे बड़ा नियोक्ता होने के नाते रेल मंत्रालय ने रोजगार पैदा करने के इस नेक काम में योगदान दिया है। रोजगार मेले के इस 10वें संस्करण में पूर्वी रेलवे के 3624 उम्मीदवारों को नियुक्ति और अन्य ज्वाइनिंग प्रक्रियाओं की पेशकश की जा रही है। एजीएम ने भी रक्षा मंत्रालय, एफसीआई, पीएंडटी, जीएसआई, एम्स, वित्तीय सेवा विभाग, शिक्षा मंत्रालय जैसे अन्य मंत्रालयों के इस रोजगार मेले में भाग लेने पर खुशी व्यक्त की। केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में नई नियुक्तियों को गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने भौतिक रूप से नियुक्ति पत्र सौंपे। इस अवसर पर 214 नवनियुक्तों ने भाग लिया, जिनमें से 25 नवनियुक्तों को गणमान्य व्यक्तियों ने शारीरिक रूप से नियुक्ति पत्र सौंपे।

जिन अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र मिला, उन्होंने रोजगार मेले के आयोजन और योग्य अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान करने के लिए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी के प्रति आभार व्यक्त किया। बीसी रॉय ऑडिटोरियम में लगे सेल्फी प्वाइंट पर अभ्यर्थी काफी उत्साह से सेल्फी ले रहे हैं। नवनियुक्तों ने यह भी कहा कि कड़ी मेहनत और शुद्ध योग्यता के माध्यम से ही उन्होंने केंद्र सरकार की नौकरियां प्राप्त करने में सफलता हासिल की है।

आस्ट्रेलिया ने न्यूजीलैंड को दी पांच रनों से शिकस्त

धर्मशाला/एजेंसी।

आईसीसी वन-डे विश्व कप के शनिवार को धर्मशाला में खेले गए रोमांचक मैच में आस्ट्रेलिया ने न्यूजीलैंड को पांच रनों से शिकस्त दी। न्यूजीलैंड की ओर से शतक लगाने वाले आलरांडर रचिन रविंद्र का शतक भी न्यूजीलैंड के काम नहीं आ सका। हालांकि निर्धारित 50 ओवरों का यह मैच काफी रोमांचक रहा और आखिरी गेंद तक हार जीत का रोमांच बना रहा। न्यूजीलैंड की टीम ने 389 रनों के बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए 50 ओवरों में नौ विकेट खोकर 383 रन बनाए। न्यूजीलैंड की तरफ से रचिन रविंद्र ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 89 गेंदों में सबसे अधिक 116 रन बनाए जिसमें नौ चौके और पांच छक्के शमिल थे। इसके अलावा नीशम ने 58 और डैरेल मिचेल ने 54 रनों का योगदान दिया। बावजूद इसके न्यूजीलैंड को इस मैच में हार का मुंह देखना पड़ा। इस हार के बाद हालांकि न्यूजीलैंड अभी भी टेबल प्वाइंट पर तीसरे नम्बर पर बरकरार है जबकि आस्ट्रेलिया चौथे नंबर पर आ चुका है। उधर आस्ट्रेलिया की ओर से गेंदबाजी में स्पिनर एडम जैंपा ने तीन जबकि तेज गेंदबाज पैट कमिन्स और हेजलवुड ने दो-दो तथा मैक्सवेल ने एक विकेट लिया। वहीं इससे पहले डेविड वार्नर और टेजविस हेड और बाद में ग्लैन मैक्सवेल की ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की बदौलत आस्ट्रेलिया ने न्यूजीलैंड के समक्ष 389 रनों का बड़ा लक्ष्य रखा है। आस्ट्रेलिया ने 50वें ओवर में 10 विकेट खोकर 388 रन बनाए। आस्ट्रेलिया की ओर से ओपनर टेज्विस हेड ने जहां शतक जड़ा, वहीं डेविड वार्नर ने 81 रन बनाए। वहीं मैक्सवेल ने 24 गेंदों में 41 रन बनाए जिनमें दो छक्के और पांच चैके शामिल थे। इससे पूर्व आस्ट्रेलिया ने हालांकि टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया लेकिन न्यूजीलैंड का यह फैसला उन पर भारी पड़ गया। आस्ट्रेलिया की ओपनिंग जोड़ी डेविड वार्नर और टेज्विस हेड ने पहले विकेट के लिए 175 रनों की बड़ी साझेदारी कर आस्ट्रेलिया को एक बड़े स्कोर की ओर ले जाने में अहम भूमिका निभाई। इन दोनों की जबरदस्त बल्लेबाजी के चलते आस्ट्रेलिया की टीम ने महज नौ ओवरों में ही 100 रन बना लिए।

जीत का सिक्सर लगाने के इरादे से इकाना में उतरेगी रोहित सेना

- इंग्लैंड के लिए मौजूदा विश्व कप का सफर अब तक निराशाजनक रहा
- भारत के लिए तुरूप का इक्का साबित हो सकते हैं कुलदीप यादव

लखनऊ/एजेंसी।

आईसीसी विश्व कप में अब तक अजेय भारतीय टीम रविवार को इंग्लैंड के खिलाफ जीत का छक्का लगाने के इरादे से मैदान पर उतरेगी वहीं गत विजेता को सेमीफाइनल की दौड़ में बने रहने के लिये इस मैच को हर हाल में जीतना होगा।

2019 के चैंपियन इंग्लैंड के लिये मौजूदा विश्व कप का सफर अब तक बेहद निराशाजनक रहा है, ऐसे में इंग्लैंड की कोशिश भारत के खिलाफ जीत हासिल कर खोये आत्मविश्वास को वापस पाने की होगी, हालांकि इसके लिये उन्हें कप्तान रोहित शर्मा और शानदार फार्म में चल रहे विराट कोहली पर काबू पाना होगा। इंग्लैंड के खिलाफ विराट का प्रदर्शन अब तक औसत रहा है मगर बदले हालात में विराट को रोकना गोरे गेंदबाजों के लिये आसान नहीं होगा वहीं विराट इस मैच में शतक लगाकर अपने आदर्श सचिन तेंदुलकर की बराबरी कर सकते हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम की पिच अब तक बल्लेबाजों के लिये मददगार साबित हुयी है, ऐसे में यहां रनों का अंबार लगने की पूरी संभावना है। पिछले मुकाबले में भारत की जीत में अहम भूमिका अदा करने वाले तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी और इंग्लैंड के खिलाफ शानदार रिकार्ड रखने वाले रविचंद्रन अश्विन के अंतिम एकादश में शामिल किये जाने पर भी खेल प्रेमियों की नजर रहेगी। इसके अलावा लोकल ब्वाय कुलदीप यादव घरेलू दर्शकों की मौजूदगी में भारत के लिये तुरूप का इक्का साबित हो सकते हैं।

सिक्सर किंग रोहित शर्मा विश्वकप में विरोधी टीमों के लिये सिरदर्द साबित हुये हैं। आक्रामक बल्लेबाजी कर गेंदबाजों पर दवाब बनाने की उनकी रणनीति अब तक कमाल की रही है जिसके चलते मध्यक्रम के बल्लेबाजों को बेखौफ होकर खेलने का मौका मिल रहा है हालांकि इस विश्व कप में भारतीय मध्य क्रम की असली परीक्षा होनी अभी बाकी है। रोहित एंड कंपनी को अच्छी तरह पता है कि लगातार हार के बावजूद इंग्लैंड कभी भी वापसी कर सकता है,इसलिये वह इसे हल्के में लेने की भूल नहीं करेंगे।

इंग्लैंड का प्रदर्शन उनके बल्लेबाज रूट की बल्लेबाजी पर कुछ हद तक निर्भर करेगा। भारतीय उपमहाद्वीप की धीमी पिचों पर इस अंग्रेज बल्लेबाज का रिकार्ड अहम रहा है।

इकाना स्टेडियम की बात करें तो यहां लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम की सफलता का प्रतिशत कहीं ज्यादा है, ऐसे में अब तक रन चेज करने में सफल रही भारतीय टीम अगर टॉस जीतती है तो उसका चयन एक बार फिर पहले क्षेत्ररक्षण का होगा। वैसे भी शाम के समय इस मैदान पर ओस की भूमिका अहम रहने वाली है।

- रचिन रविंद्र का शतक भी नहीं आया काम
- 389 रनों के बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए न्यूजीलैंड की टीम बना सकी 383 रन

इजरायल ने गाजा में जमीनी हमले किये तेज, हमास बोला- हम भी पूरी ताकत से देंगे जवाब

हमास/एजेंसी

गाजा पट्टी में अब इज़रायली सेना और हमास के लड़के जमीन पर आमने-सामने की लड़ाई लड़ रहे हैं. इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का कहना है कि वह हमास को जड़ से खत्म कर ही शांत बैठेंगे. वहीं, हमास ने शनिवार को कहा कि इजरायली सेना द्वारा फिलिस्तीनी इलाके पर अपने हवाई और जमीनी हमलों को तेज करने के बाद गाजा में उसके लड़ाके रपूरी ताकतर से इजरायली हमलों का सामना करने के लिए तैयार हैं. गाजा पर शासन करने वाले फिलीस्तीनी उग्रवादी समूह ने पहले कहा था कि इजरायल द्वारा गाजा में तेज हमलों की रिपोर्ट के बाद उसके लड़ाके इजरायल की सीमा के पास के इलाकों में इजरायली सैनिकों के साथ संघर्ष कर रहे हैं.

रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, इजराइली सैन्य प्रवक्ता रियर एडमिरल डेनियल हगारी ने शुक्रवार शाम एक टेलीविजन समाचार ब्रीफिंग में कहा, रपिछले कुछ दिनों में किए गए हमलों के अलावा, जमीनी सेना आज रात अपने अभियान का विस्तार कर रही है. गाजा पर आक्रमण की शुरुआत हो सकती है.र उन्होंने कहा कि इजराइल की वायु सेना हमास द्वारा खोदी गई सुरंगों और अन्य बुनियादी ढांचे पर लगातार हमले कर रही है.

हमास ने शनिवार सुबह एक बयान में कहा, अल-कसम ब्रिगेड और सभी फिलिस्तीनी प्रतिरोध बल पूरी ताकत से (इज़राइल की) आक्रामकता का सामना करने और उसकी घुसपैठ को विफल करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं.र इससे पहले हमास की सशस्त्र शाखा ने शुक्रवार देर रात कहा कि उसके लड़ाके गाजा के उत्तरपूर्वी शहर बेत हनौन और अल-बुरीज के मध्य क्षेत्र में इजरायली सैनिकों के साथ युद्ध कर रहे हैं. इजरायली प्रधानमंत्री का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, नेतन्याहू और उनकी पराजित सेना कोई सैन्य जीत हासिल नहीं कर पाएगी. हमास द्वारा 7 अक्टूबर को किये गए हमले के बाद इजरायल लगातार गाजा पट्टी पर एयर स्ट्राइक कर रहा है. कुछ दिनों पहले उत्तरी गाजा की सीमा पर इजरायल ने अपने टैंक और सैनिक भी तैनात कर दिये थे. इसके बाद पीएम नेतन्याहू ने कहा था कि वह हमास को जड़ से खत्म करके ही दम लेंगे. अब इज़रायल हवाई हमलों के साथ जमीनी हमले भी गाजा में कर रहा है.

इज़रायल में हुए हमास के हमलों में लगभग 1400 लोग मारे गए थे, जिसमें काफी महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे. 200 से ज्यादा लोगों को बंधक बनाकर भी हमास के लड़ाके ले गए थे.

लोकेश शर्मा का हजारों समर्थकों के साथ मुख्यमंत्री आवास पर शक्ति प्रदर्शन

भीलवाड़ा से टिकट के लिए जताई दावेदारी

जयपुर (खलील कुरैशी)

कांग्रेस के युवा नेता लोकेश शर्मा राजस्थान विधानसभा चुनाव-2023 के लिए भीलवाड़ा शहर विधानसभा सीट से कांग्रेस पार्टी में टिकट की दावेदारी कर रहे हैं। ऐसे में आज भीलवाड़ा से हजारों की संख्या में लोकेश शर्मा के स्थानीय समर्थक जयपुर में सिविल लाइन्स स्थित मुख्यमंत्री आवास पहुंचे और शक्ति प्रदर्शन किया। इस दौरान समर्थकों ने लोकेश शर्मा के समर्थन में नारेबाजी की और पूरे जोर-शोर से मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के सामने लोकेश शर्मा को भीलवाड़ा शहर विधानसभा सीट से टिकट देने की मांग पुरजोर तरीके से उठाई। लोकेश शर्मा के समर्थन में मुख्यमंत्री आवास पर पहुंचे लोगों में भीलवाड़ा के युवा, बुजुर्ग, प्रबुद्धजन सहित विभिन्न वर्गों के लोग शामिल थे।समर्थकों का कहना था कि लगातार 2 दशक से क्षेत्र में भाजपा के विधायक हैं, इससे भीलवाड़ा की दशा बिगड़ चुकी है और विकास की गति पूरी तरह रुक गई है। भाजपा के 3 बार के मौजूदा विधायक के क्षेत्रवासियों की मांगों को अनदेखा करने से क्षेत्र के लोगों को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है। ऐसे में क्षेत्रावसियों की मांग है कि कांग्रेस पार्टी इस बार के चुनाव में इस बार लोकेश शर्मा जैसे पार्टी के एक युवा नेता को क्षेत्र से टिकट दे, ताकि यहां कांग्रेस पार्टी के लिए 2 दशक के इंतजार को खत्म किया जा सके और भीलवाड़ा शहर एक बार फिर से विकास की राह पर अग्रसर हो सके।

वहीं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी सीएम आवास पर आए समर्थकों को इस बात के लिए आश्वस्त किया कि कांग्रेस पार्टी टिकट वितरण के दौरान लोकेश शर्मा की पार्टी संगठन के प्रति निष्ठा और उनकी सक्रियता को पूरा ध्यान रखा जाएगा और उनके हितों की रक्षा की जाएगी। उन्होंने कहा कि स्थानीय लोगों को किसी युवा चेहरे को समर्थन देना चाहिए।बता दें राजस्थान विधानसभा चुनाव को लेकर रविवार 29 अक्टूबर को दिल्ली में इलेक्शन स्क्रीनिंक कमेटी के चेयरमैन गौरव गोगोई की अध्यक्षता में कमेटी की बैठक होनी है। इस बैठक में राजस्थान की शेष सीटों पर कांग्रेस की तरफ से टिकट वितरण को लेकर टिकट के संभावित उम्मीदवारों के नामों पर मंथन किया जाएगा। इसके बाद सोमवार 30 अक्टूबर को कांग्रेस केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक होनी है। उम्मीद की जा रही है कि इस बैठक में कांग्रेस पार्टी शेष 105 सीटों पर पार्टी के उम्मीदवारों के नाम फाइनल कर सकती है। इन दोनों अहम बैठकों से पहले लोकेश शर्मा की तरफ से शनिवार 28 अक्टूबर को मुख्यमंत्री के सामने शक्ति प्रदर्शन किया।लोकेश शर्मा सोशल मीडिया पर खासे लोकप्रिय हैं, वे सोशल मीडिया पर निरंतर सक्रिय रहते हुए राज्य सरकार और कांग्रेस पार्टी के खिलाफ बयानबाजी करने वाले नेताओं को मुंहतोड़ जवाब देते हैं। साथ ही शर्मा फील्ड में भी लगातार सक्रिय रहे हैं, उनके साथ पूरे राजस्थान में समर्पित युवाओं की ×फौज है। शर्मा ने प्रदेशभर में युवा संवाद की पहल शुरू की। जिसके तहत के तहत वे लगभग 30 जिलों में 120 से ज्यादा विधानसभा क्षेत्रों का दौरा कर चुके हैं। शर्मा आगामी चुनाव में पार्टी का उभरता हुआ भविष्य का लीडर बनकर सामने आएं, राजस्थान के युवाओं की यह मंशा और भीलवाड़ा की यह स्थानीय मांग अब जयपुर के सियासी

संक्षिप्त समाचार

नदबई से रोहताश चतुर्वेदी होंगे आप पार्टी के प्रत्याशी

- चतुर्वेदी ने कांग्रेस पार्टी छोड़कर की थी आप पार्टी की सदस्यता ग्रहण

चमकता राजस्थान/नदबई (राजवीर सिंह)। आम आदमी पार्टी ने शनिवार को 21 प्रत्याशियों की दूसरी सूची जारी की जिसमें नदबई विधानसभा से रोहताश चतुर्वेदी को प्रत्याशी बनाया है। कांग्रेस पार्टी को छोड़कर चतुर्वेदी ने आम आदमी पार्टी में शामिल हुए। आम आदमी पार्टी ने शनिवार को अपनी दूसरी सूची जारी कर दी जिसमें आम आदमी पार्टी ने 21 सीटों पर उम्मीदवार घोषित किए हैं। भरतपुर जिले की नदबई विधानसभा सीट से रोहताश चतुर्वेदी को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। चतुर्वेदी नदबई के निवासी है 5 जुलाई 1973 को इनका जन्म नदबई समीप नगला ठाकुरान में हुआ था। इन्होंने शिक्षा भी नदबई से प्राप्त की है ये 12 वीं तक पढ़े है, वर्तमान में चतुर्वेदी आम आदमी पार्टी में प्रदेश संयुक्त सचिव पद पर नियुक्त है।

नोख में अवैध रूप से संचालित हो रही मीट की दुकान हटाने की मांग

- ग्रामीणों ने एसएचओ को दिया ज्ञापन

चमकता राजस्थान/बाप(कविकान्त खत्री)। बाप ब्लॉक की ग्राम पंचायत नोख मुख्यालय पर मेघवालों का बास में अवैध रूप से संचालित हो रही मीट की दुकान हटाने की मांग की गई है। इसे लेकर सैकड़ों ग्रामीणों ने शनिवार को प्रदर्शन करते हुए नोख एसएचओ को ज्ञापन दिया। ग्रामीणों का कहना है कि देवबन बाबा की पवित्र नगरी नोख में जीव हत्या होना पाप है। ऐसे में धार्मिक नगरी में प्रतिदिन जीव हत्याओं को लेकर ग्रामीणों में रोष व्याप्त है। मेघवालों का बास में आबादी के पास अवैध रूप से मीट की दुकान संचालित होने से मोहल्लेवासी भी परेशान है। ज्ञापन में मुख्य चौराहे के पास लगी मीट की दुकानों को भी हटाने की मांग की गई। ज्ञापन देते समय नोख सरपंच प्रतिनिधि अजय छंगाणी, उप प्रधान महीपाल सिंह भाटी, पूर्व सरपंच मेघसिंह भाटी, पूर्व जिला मंत्री दिलीप सिंह नोख, कांग्रेस नेता गुलाम खान, मंगू सिंह भाटी, भाजपा नेता जेठाराम राईका, युवा नेता मुरली सैन, मधुसूदन छंगाणी, गोवर्धन सिंह परिहार, मोती सिंह भाटी, भाखर सिंह भाटी, मदन सिंह, ओमाराम माली, मंगतू खान, केशव गोपा, सुमेर खान, सत्यनारायण सुथार, नरेंद्र सिंह भाटी, लीलाधर माली, महेंद्र सांखला, प्रेम कुमार सेन, नेमीचंद माली सहित गांव के सैकड़ो ग्रामीण मौजूद थे।

नेट थियेट पर कथक ने समां बांधा

- ताल तीन ताल में कथक की शानदार प्रस्तुति

जयपुर (का.सं)। ' नेट थियेट कार्यक्रमों की श्रृंखला में कथक नृत्याभिनय में सुप्रसिद्ध नृत्याँगना नमिता जैन और उनके शिष्यों द्वारा भावपूर्ण जयपुर कथक की प्रस्तुति पर दर्शक वाह वाह कर उठे 'नेट थियेट के राजेंद्र शर्मा राजू ने बताया कि इस वेब की परिकल्पना अनिल मारवाड़ी द्वारा की गई ' इसी आभासी रंगमंच पर आज नमिता जैन ने राग दरबारी में स्वामी हरिदास द्वारा रचित कृष्ण वंदना ₹नागर नट निरत करत₹ पर ताल चौताल में कथक की प्रस्तुति से मंत्र मुग्ध किया ' इसके बाद उनकी शिष्य कत्थक कलाकार सिद्धि जैन, नव्या जाखड़ वान्या परचानी और मान्या खरबंदा ने ताल तीन ताल में शुद्ध कथक थाट, आमद, परण, तोड़े, चक्कर, तत्कार आदि की सुन्दर प्रस्तुति से जयपुर कथक की बारीकियों से रूबरू करवाया। कलाकारों के नृत्य में भाव लयकारी ताल और भाव की सुन्दर झलक देखने को मिली।इनके साथ गायन पर पं.रमेश मेवाल, पढंत पर पं.कौशल कान्त पखावज पर युवराज सिंह और तबले पर आदित्य सिंह ने असरदार संगत कर कथक की परंपरा को परवान चढ़ाया।संचालन मनोज स्वामी, संगीत सागर गढ़वाल, दृश्य सज्जा जीवितेश शर्मा एवं अंकित शर्मा, कार्यक्रम का संयोजन नवल डांगी ।

आगरा रेल मंडल ने 10 वे रोजगार मेला में सहभागिता की

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियों कांफ्रेंसिंग के माध्यम से रोजगार समारोह के दौरान, नए भर्ती होने वाले 51000 अभ्यर्थियों को नियुक्ति-पत्र सौंपे गए

चमकता राजस्थान

धौलपुर !(रामदास तरुण)। सूरसदन संजय प्लेस आगरा में स्वास्थ एवं परिवार कल्याण केन्द्रीय राज्य मंत्री प्रो. एस पी सिंह बघेल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 28 अक्टूबर 2023 को 13.00 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 51,000 से अधिक नवनियुक्त कर्मियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने इन नवनियुक्त कर्मियों को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि प्रथम रोजगार मेला 22 अक्टूबर 22 में आयोजित हुआ था । उसके पश्चात निरंतर इन्हें आयोजित कर लाखों अभ्यर्थियों को समारोह आयोजित कर नियुक्ति पत्र प्रदान किए जा रहे हैं। इस बार देश भर में 37 स्थानों पर आयोजित किया गया। अन्य क्षेत्रीय रेलों की तरह उत्तर मध्य रेलवे आगरा रेल मंडल ने आज प्रधानमंत्री रोजगार मेला में सहभागिता की। रेलवे की और से प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी प्रयागराज अनुराग त्रिपाठी ,मंडल रेल प्रबंधक आगरा तेज प्रक ाश अग्रवाल ,अपर मंडल रेल प्रबंधक परिचालन आगरा वीरेंद्र वर्मा एवं वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी सनत जैन सहित अन्य ब्रांच अधिकारी उपस्थित रहे` मिनिस्ट्री ऑफ होम अफैयर से कमलेश कुमार ,पोस्टल विभाग से संजय कुमार ,शिक्षा विभाग से अजरुद्दीन शैक ,डिप्टी एम केनरा बैंक से खेम सिंह नेगी उपस्थित रहे। आगरा में उक्त रोज़गार मेला का सीधा प्रसारण सूर सदन संजय प्लेस आगरा से किया गया जहाँ पर कुल 210 अभ्यर्थियों को जिसमे 136 अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र प्रदान किये गए और 74 अभ्यर्थी वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम में सम्मिलित हुए

ये नई नियुक्तियां मुख्य रूप से यूपी, राजस्थान, एमपी, बिहार और दिल्ली आदि के विभिन्न जिलों से संबंधित हैं। विशेष रूप से प्रयाग राज,कानपुर,झांसी,ललितपुर,महोबा,औरया,भोपाल,हमीपुरअलवर,दौसा,धौलपुर,भिंड,मथुरा,मेरठ ,छतरपुर,मुरैना,समस्तीपुर,करौली ,मुजफ्फरनगर आदि जिले प्रमुख हैं युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की सतत प्रतिबद्धता को पूरा करने और नागरिकों का कल्यांण सुनिश्चित करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा । प्रधानमंत्री के निर्देशानुसार, सभी मंत्रालय और विभाग अनुमोदित पदों की रिक्तियों को भरने के लिए मिशन मोड में काम कर रहे हैं ।ये भर्तियां मंत्रालयों और विभागों द्वारा अपने स्तर पर बैक ,यूपीएससी, एसएससी, रेलवे भर्ती बोर्ड के माध्यम से मिशन मोड में की जा रही हैं । भर्ती प्रक्रिया को तीव्र करने के लिए, चयन प्रक्रियाओं को सरलीकृत और तकनीक-अनुकूल बनाया गया है । सर्वविदित है कि भारतीय रेलवे न केवल भारत की सबसे बड़ी बल्कि सबसे बेहतर नियोक्ता भी है । यह अपने कर्मचारियों को वह सब प्रदान करती है जो उनके लिए जरूरी होता है । भारतीय रेलवे में नौकरी करना न केवल सामाजिक दृष्टि से सम्मानजनक है बल्कि अनेक दृष्टि से लाभप्रद भी है ।

धौलपुर पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार चौधरी के निर्देशन बाड़ी थाना पुलिस और एफएस टीम की बडी कार्यवाही

चमकता राजस्थान

धौलपुर! (रामदास तरुण) । धौलपुर के बाड़ी थाना क्षेत्र में अवैध शराब ले जाते हुए कृष्णा कुशवाह को किया गिरफ्तार, उसके कब्जे से घुन्धरु शराब के 58 पब्बे ,देशी मदिरा सादा काँच के 41 पब्बे, किन्गि×फशर कैन की 22 बीयर, काँच की बोतल किन्गफिशर की 22 बीयर, देशी शराब orange hill vod' के 14 पब्बे किये बरामद थाना प्रभारी लक्ष्मण सिंह, एफएस टीम प्रभारी हरिओम सिंह की कार्यवाही आई. जी. रूपेंद्र सिंह सिंघ, पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार चौधरी, लक्ष्मण सिंह के निर्देश पर कार्यवाही की गई।

30 हजार रुपये इनामी साथी सहित गिरफ्तार

- प्रदीप जयपुरा हत्याकांड व एक अन्य हत्या में वांछित, दो अवैध पिस्टल, एक देशी कट्टा व 7 जिंदा कारतूस बरामद

चूरू! (खलील कुरैशी)28 अक्टूबर। डीएसटी व थाना रामगढ़ पुलिस ने शनिवार को लॉरेंस बिश्नोई और अनिल ढाणी केहरा गैंग के सक्रिय सदस्य राहुल उर्फ धोलू धाणक पुत्र रमेश (28) निवासी देवराला थाना तोशाम जिला भिवानी व उसके साथी अनिल कुमार धाणक पुत्र सत्यवीर सिंह (30) निवासी भाकरा थाना हमीरवास को गिरफ्तार कर दो अवैध पिस्टल, एक देसी कट्टा और सात जिंदा कारतूस समेत गिरफ्तार किया है एसपी प्रवीण नायक नुनावत ने बताया कि विधानसभा चुनाव के मध्य नजर चलाए जा रहे अभियान के क्रम में शनिवार को अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश चौधरी व सीओ इस्लाम खान के सुपरविजन तथा एसएचओ सुभाष चंद्र के नेतृत्व में नाकाबंदी के दौरान एक बाइक पर सवार दोनों आरोपियों को पीछा कर अवैध हथियार समेत गिरफ्तार किया गया है। जिनसे हथियारों और फरारी के दौरान की गई वारदातों के संबंध में पूछताछ की जा रही है।एसपी नुनावत में बताया कि गिरफ्तार बदमाश राहुल उर्फ धोलू लॉरेंस बिश्नोई और केहरा गैंग का सक्रिय सदस्य है फरवरी 2021 में इसने अपने साथियों के साथ प्रदीप स्वामी जैतपुरा व उसके साथ बैठे अन्य दो लोगों पर गोलियों से ताबड़तोड़ हमला करके हत्या कर दी थी। जिसमें उनके कार्यालय द्वारा इस पर 20 हजार के नकद इनाम की घोषणा की गई थी।एसपी ने बताया कि इस घटना के बाद फरारी के दौरान आरोपी ने अपने साथियों के साथ मिलकर 6 मई 2023 को कस्बा सिवानी में दिनदहाड़े ×फायरिंग कर नरेश पंडित की हत्या कर दी। जिसमें एसपी भिवानी हरियाणा द्वारा 10 हजार रुपये के ईनाम की घोषणा की गई थी।

नसीराबाद भाजपा प्रत्याशी रामस्वरूप लाम्बा के चाचा ने थामा आर एल पी का दामन

चमकता राजस्थान/(रघुनंदन पारीक)। अजमेर भाजपा के जाने माने नेता स्वर्गीय सांवर लाल जाट के भाई नसीराबाद के वर्तमान विधायक एवं नसीराबाद भाजपा प्रत्याशी रामस्वरूप लाम्बा के चाचा जगदीश लाम्बा ने जयपुर आर एल पी के अध्यक्ष हनुमान बेनिवाल से मिलकर आर.एल.पी.की सदस्यता ग्रहण की,सुत्रो के अनूसार जगदीश लाम्बा मसूदा विधानसभा से विधायक का चुनाव लडेंगे' भाजपा में मची खलबली अजमेर में लगातार भाजपा कार्यकर्ता टिकटों को लेकर ख़फ़ा नजर आ रहे हैं।

उद्यमों के विकास के लिए मोदी सरकार हमेशा तत्पर : दिया कुमारी

भाजपा प्रत्याशी दिया कुमारी ने शुरू किया विद्याधरनगर विधानसभा में सक्रिय जनसंपर्क अभियान

जयपुर! (खलील कुरैशी)

दिया कुमारी ने शनिवार को विद्याधर विधानसभा में जनसंपर्क की शुरुआत जलवायु विहार में आयोजित स्वागत समारोह से की। लोगों से मिले अभूतपूर्व स्नेह और आशीर्वाद के लिए दिया कुमारी ने सभी का धन्यवाद दिया। जनसंपर्क के क्रम में दिया कुमारी ने क्षेत्र के वार्ड 17 में देवी दर्शन करके सर्व मंगल की कामना की और जनता से उनका सहयोग तथा आशीर्वाद मांगा।

क्षेत्र में स्थित विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र में आयोजित एक बैठक में दिया कुमारी ने उद्यमियों से वार्तालाप किया। इस दौरान सवाल का जवाब देते हुए दिया कुमारी ने कहा कि मोदी जी के अथक प्रयासों से इंफ्रास्ट्रक्चर काफी सुधरा है, परन्तु प्रदेश में सरकार बनने के बाद भाजपा सुनिश्चित करेगी कि हर छोटी से छोटी समस्या का हल निकाला जाए।

औद्योगिक क्षेत्र में पानी, सड़क और निकासी जैसी जितनी भी समस्यांए हैं, उन सबको हल किया जायेगा। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार हर मुमकिन प्रयास कर रही है कि रोज़गार पैदा करने वालों के हाथ मजबूत किए जायें, परन्तु प्रदेश की गहलोत सरकार ने इस दिशा में कोई कदम नहीं बढ़ाये। इसके बाद भाजपा प्रत्याशी दिया कुमारी ने युवा सम्मलेन में शिरकत की और युवा जोश को वोट में तब्दील करने का आ''हन किया। उन्होंने कहा कि इन पांच सालों में युवाओं के भविष्य के साथ जो खिलवाड़ हुआ है उसका जवाब देने का व×क्त अब आ गया है और जिन्होंने युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है उनको अब उनके कर्मो का फल जल्द ही मिलेगा। देर शाम उन्होंने वार्ड 42 में जनसमपर्क किया और कृष्णा कॉलोनी में आयोजित वाल्मीकि जयंती के कार्यक्रम में भी उपस्थिति दर्ज़ करवाई।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929